नवम्बर 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20

भारत 2023 INDIA

"वसुधैव कुटुम्बकम्"

एक पृथ्वी • एक परिवार • एक भविष्य

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 **प्रधानमंत्री का संदेश** 1

02 **प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख** 14

2.1 **भारत की G20 अध्यक्षता**
सुधार, सद्भाव और आशा की अध्यक्षता 16

2.1.1 **भविष्य की राह : भारत और G20**
अमिताभ कान्त का लेख 22

2.2 **विक्रम-एस : भारत का पहला स्वदेशी निजी अन्तरिक्ष प्रक्षेपण** 26

2.3 **भारत में ड्रोन उद्योग का उदय**
दे रहा विचारों को ऊँची उड़ान 30

2.3.1 **ड्रोन प्रौद्योगिकी से मिल रही उद्योगों को नई उड़ान**
नील मेहता का लेख 38

2.4 **लिडी क्रो-यू : नगालैंड के पारम्परिक ज्ञान का संरक्षक** 40

2.5 **भारतीय संगीत**
विश्व पटल पर लहराता भारतीय परचम 42

2.5.1 **भारतीय संगीत : शान्ति और दिव्यता का स्रोत**
इलैयाराजा का साक्षात्कार 47

2.5.2 **भारतीय संगीत में कुछ दिव्य है**
डॉ. एल. सुब्रमण्यम का साक्षात्कार 48

2.5.3 **भारतीय संगीत : भारतीय सांस्कृतिक विरासत की गौरवशाली परम्परा**
शंकर महादेवन का साक्षात्कार 49

2.6 **सामुदायिक पुस्तकालयों का शिक्षा का अलख जगाने में योगदान** 50

2.7 **मानव मन्दिर**
मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के खिलाफ आशा की नई किरण 52

2.7.1 **मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी का इलाज तलाशना – आत्मनिर्भर भारत की एक कसौटी**
संजना गोयल का लेख 60

03 **प्रतिक्रियाएँ** 62

प्रधानमंत्री का संदेश

मेरे प्यारे देशवासियो ! नमस्कार

'मन की बात' में एक बार फिर आप सभी का बहुत-बहुत स्वागत है। यह कार्यक्रम 95वाँ एपिसोड है। हम बहुत तेजी से 'मन की बात' के शतक की तरफ़ बढ़ रहे हैं। ये कार्यक्रम मेरे लिए 130 करोड़ देशवासियों से जुड़ने का एक और माध्यम है। हर एपिसोड से पहले गाँव-शहरों से आए ढेर सारे पत्रों को पढ़ना, बच्चों से लेकर बुजुर्गों के ऑडियो मैसेज को सुनना, ये मेरे लिए एक आध्यात्मिक अनुभव की तरह होता है।

साथियो! आज के कार्यक्रम की शुरुआत मैं **एक अनूठे उपहार की चर्चा के साथ करना चाहता हूँ। तेलंगाना के राजन्ना सिर्सिल्ला जिले में एक बुनकर भाई हैं– येल्दी हरिप्रसाद गारू। उन्होंने मुझे अपने हाथों से G20 का यह लोगो बुन करके भेजा है। ये शानदार उपहार देखकर तो मैं हैरान ही रह गया। हरिप्रसादजी को अपनी कला में इतनी महारत हासिल है कि वो सबका ध्यान आकर्षित कर लेते हैं। हरिप्रसादजी ने हाथ से बुने G20 के इस लोगो के साथ ही मुझे एक चिट्ठी भी भेजी है। इसमें उन्होंने लिखा है कि अगले साल G20 शिखर सम्मेलन की मेज़बानी करना भारत के लिए बड़े ही गौरव की बात है। देश की इसी उपलब्धि की खुशी में उन्होंने G20 का यह लोगो अपने हाथों से तैयार किया है।** बुनाई की यह बेहतरीन प्रतिभा उन्हें अपने पिता से विरासत में मिली है और आज वे पूरे पैशन के साथ इसमें जुटे हुए हैं।

साथियो! कुछ दिन पहले ही **मुझे G20 लोगो और भारत की प्रेसिडेंसी की**

G20 अध्यक्षता

एक प्रगतिशील विश्व के लिए भारत का ब्लूप्रिन्ट

वेबसाइट को लॉन्च करने का सौभाग्य मिला था। इस लोगो का चुनाव एक पब्लिक कांटेस्ट के ज़रिए हुआ था। जब मुझे हरिप्रसाद गारू द्वारा भेजा गया ये उपहार मिला, तो मेरे मन में एक और विचार उठा। तेलंगाना के किसी जिले में बैठा व्यक्ति भी G20 जैसी सम्मिट से खुद को कितना कनेक्ट महसूस कर सकता है, ये देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। **आज हरिप्रसाद गारू जैसे अनेकों लोगों ने मुझे चिट्ठी भेजकर ये लिखा है कि देश को इतने बड़े सम्मिट की मेज़बानी मिलने से उनका सीना चौड़ा हो गया है।** मैं आपसे पुणे के रहने वाले सुब्बा राव चिल्लाराजी और कोलकाता के तुषार जगमोहन, उनके संदेशे का भी ज़िक्र करूँगा। इन्होंने G20 को लेकर भारत के प्रो-एक्टिव एफर्ट्स की बहुत सराहना की है।

साथियो! G20 की वर्ल्ड पोपुलेशन में दो-तिहाई, वर्ल्ड ट्रेड में तीन-चौथाई और वर्ल्ड जीडीपी में 85 प्रतिशत भागीदारी है। आप कल्पना कर सकते हैं– भारत अब से 3 दिन बाद यानी एक दिसम्बर से इतने बड़े समूह की, इतने सामर्थ्यवान समूह की अध्यक्षता करने जा रहा है। भारत के लिए, हर भारतवासी के लिए, ये कितना बड़ा अवसर आया है। ये इसलिए भी और विशेष हो जाता है, क्योंकि ये ज़िम्मेदारी भारत को आज़ादी के अमृतकाल में मिली है।

साथियो! G20 की अध्यक्षता हमारे लिए एक बड़ी ऑपर्चुनिटी बनकर आई है। हमें इस मौके का पूरा उपयोग करते हुए ग्लोबल गुड, विश्व कल्याण पर फोकस करना है। चाहे पीस हो या यूनिटी, पर्यावरण को लेकर संवेदनशीलता की बात हो, या फिर सस्टेनेबल डेवलपमेंट की, भारत के पास इनसे जुड़ी चुनौतियों का समाधान है। हमने वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ़्यूचर की जो थीम दी है, उससे वसुधैव कुटुम्बकम् के लिए हमारी प्रतिबद्धता जाहिर होती है। हम हमेशा कहते हैं–

ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु ।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु ।
सर्वेषां पूर्णंभवतु ।
सर्वेषां मङ्गलंभवतु ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अर्थात् सबका कल्याण हो, सबको शान्ति मिले, सबको पूर्णता मिले और सबका मंगल हो। आने वाले दिनों में, देश के अलग-अलग हिस्सों में G20 से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। इस दौरान दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से लोगों को आपके राज्यों में आने का मौका मिलेगा। मुझे भरोसा है कि आप अपने यहाँ की संस्कृति के विविध और विशिष्ट रंगों को दुनिया के सामने लाएँगे और आपको ये भी याद रखना है कि G20 में आने वाले लोग, भले ही अभी एक डेलिगेट के रूप में आएँ, लेकिन भविष्य के टूरिस्ट भी हैं। **मेरा आप सभी से एक और आग्रह है, विशेषतौर से मेरे युवा साथियों से, हरिप्रसाद गारू की तरह ही आप भी, किसी-ना-किसी रूप में G20 से ज़रूर जुड़ें। कपड़े पर G20 का भारतीय लोगो, बहुत कूल तरीके से, स्टाइलिश तरीके से बनाया जा सकता है, छापा जा सकता है। मैं स्कूलों, कॉलेजों, यूनिवर्सिटीज़ से भी आग्रह करूँगा कि वो अपने यहाँ G20 से जुड़ी चर्चा, परिचर्चा, कॉम्पिटिशन कराने के अवसर बनाएँ।** आप G20.in वेबसाइट पर जाएँगे तो आपको अपनी रुचि के अनुसार वहाँ बहुत सारी चीज़ें मिल जाएँगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, 18 नवम्बर को पूरे देश ने स्पेस सेक्टर में एक नया इतिहास बनते देखा। इस दिन **भारत ने अपने पहले ऐसे रॉकेट को अन्तरिक्ष में भेजा, जिसे भारत के प्राइवेट सेक्टर ने डिज़ाइन और तैयार किया था। इस रॉकेट का नाम है– 'विक्रम-एस'।** श्रीहरिकोटा से स्वदेशी स्पेस स्टार्ट-अप के इस पहले रॉकेट ने जैसे ही ऐतिहासिक उड़ान भरी, हर भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा हो गया।

साथियो! 'विक्रम-एस' रॉकेट कई सारी खूबियों से लैस है। दूसरे रॉकेट्स की तुलना में यह हल्का भी है और सस्ता भी है। इसकी डेवलेपमेंट कोस्ट अन्तरिक्ष अभियान से जुड़े दूसरे देशों

की लागत से भी काफ़ी कम है। कम कीमत में विश्वस्तरीय स्टैंडर्ड, स्पेस टेक्नोलॉजी में अब तो ये भारत की पहचान बन चुकी है। इस रॉकेट को बनाने में एक और आधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल हुआ है। आप ये जानकर हैरान रह जाएँगे कि इस रॉकेट के कुछ ज़रूरी हिस्से 3D प्रिंटिंग के ज़रिए बनाए गए हैं। सही में, **'विक्रम-एस' के लॉन्च मिशन को जो 'प्रारंभ' नाम दिया गया है, वो बिल्कुल फिट बैठता है। ये भारत में प्राइवेट स्पेस सेक्टर के लिए एक नए युग के उदय का प्रतीक है। ये देश में आत्मविश्वास से भरे एक नए युग का आरम्भ है।** आप कल्पना कर सकते हैं जो बच्चे कभी हाथ से कागज़ का हवाई जहाज़ बनाकर उड़ाया करते थे, उन्हें अब भारत में ही हवाई जहाज़ बनाने का मौका मिल रहा है। आप कल्पना कर सकते हैं कि जो बच्चे कभी चाँद-तारों को

विक्रम-एस

भारत के आत्मविश्वास का नया सवेरा

#प्रारंभ

देखकर आसमान में आकृतियाँ बनाया करते थे, उन्हें अब भारत में ही रॉकेट बनाने का मौका मिल रहा है। **स्पेस को प्राइवेट सेक्टर के लिए खोले जाने के बाद, युवाओं के ये सपने भी साकार हो रहे हैं। रॉकेट बना रहे ये युवा मानो कह रहे हैं– स्काई इज़ नॉट द लिमिट।**

साथियो! भारत स्पेस के सेक्टर में अपनी सफलता, अपने पड़ोसी देशों से भी साझा कर रहा है। कल ही भारत ने एक सैटेलाइट लॉन्च की, जिसे भारत और भूटान ने मिलकर डेवलप किया है। ये सैटेलाइट बहुत ही अच्छे रेजोल्यूशन की तस्वीरें भेजेगी, जिससे भूटान को अपने प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन में मदद मिलेगी। इस सैटेलाइट की लॉन्चिंग, भारत-भूटान के मज़बूत सम्बन्धों का प्रतिबिम्ब है।

साथियो! आपने गौर किया होगा पिछले कुछ 'मन की बात' में हमने स्पेस, टेक, इनोवेशन पर खूब बात की है। **इसकी दो खास वजह हैं, एक तो यह हमारे युवा इस क्षेत्र में बहुत ही शानदार काम कर रहे हैं। दे आर थिंकिंग बिग एंड अचिविंग बिग। अब वे छोटी-छोटी उपलब्धियों से सन्तुष्ट होने वाले नहीं हैं। दूसरी यह कि इनोवेशन और वैल्यू क्रिएशन के इस रोमांचक सफ़र में वे अपने बाकी युवा साथियों और स्टार्ट-अप को भी इनकरेज कर रहे हैं।**

साथियो! जब हम टेक्नोलॉजी से जुड़े इनोवेशन की बात कर रहे हैं, तो ड्रोन को कैसे भूल सकते हैं? ड्रोन के क्षेत्र में भी भारत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। कुछ दिनों पहले हमने देखा कि कैसे

भारतीय ड्रोन उद्योग

बाधाओं से परे उड़ान

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर में ड्रोन के ज़रिए सेब ट्रांसपोर्ट किए गए। किन्नौर, हिमाचल का दूर-सुदूर जिला है और वहाँ इस मौसम में भारी बर्फ रहा करती है। इतनी बर्फ़बारी में किन्नौर का हफ़्तों तक राज्य के बाकी हिस्से से सम्पर्क बहुत मुश्किल हो जाता है। ऐसे में वहाँ से सेब का ट्रांसपोर्टेशन भी उतना ही कठिन होता है। अब ड्रोन टेक्नोलॉजी से हिमाचल के स्वादिष्ट किन्नौरी सेब लोगों तक और जल्दी पहुँचने लगेंगे। इससे हमारे किसान भाई-बहनों का खर्च कम होगा– सेब समय पर मंडी पहुँच पाएगा, सेब की बर्बादी कम होगी।

साथियो! आज हमारे देशवासी अपने इनोवेशन्स से उन चीजों को भी सम्भव बना रहे हैं, जिसकी पहले कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। इसे देखकर किसे ख़ुशी नहीं होगी? हाल के वर्षों में हमारे देश ने उपलब्धियों का एक लम्बा सफ़र तय किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम भारतीय और विशेषकर हमारी युवा-पीढ़ी अब रुकने वाली नहीं है।

प्रिय देशवासियो! मैं आप लोगों के लिए एक छोटी-सी क्लिप प्ले करने जा रहा हूँ....

(स्कैन करें और सुनें।)

आप **सभी ने इस गीत को कभी-न-कभी ज़रूर सुना होगा। आखिर यह बापू का पसन्दीदा गीत जो है, लेकिन,**

अगर मैं ये कहूँ कि इसे सुरों में पिरोने वाले गायक ग्रीस के हैं, तो आप हैरान ज़रूर हो जाएँगे और ये बात आपको गर्व से भी भर देगी। इस गीत को गाने वाले ग्रीस के गायक हैं - 'Konstantinos Kalaitzis'। उन्होंने इसे गाँधीजी के 150वें जन्म-जयंती समारोह के दौरान गाया था, लेकिन आज मैं उनकी चर्चा किसी और वजह से कर रहा हूँ। उनके मन में इंडिया और इंडियन म्यूज़िक को लेकर ग़ज़ब का पैशन है। भारत से उन्हें इतना लगाव है, पिछले 42 (बयालीस) वर्षों में वे लगभग हर वर्ष भारत आए हैं। उन्होंने भारतीय संगीत के ऑरिजन, अलग-अलग इंडियन म्यूज़िकल सिस्टम, विविध प्रकार के राग, ताल और रास के साथ ही विभिन्न घरानों के बारे में भी स्टडी की है। उन्होंने भारतीय संगीत की कई महान विभूतियों के योगदान का अध्ययन किया है, भारत के क्लासिक डांस के अलग-अलग पहलुओं को भी उन्होंने करीब से समझा है। भारत से जुड़े अपने इन तमाम अनुभवों को अब उन्होंने एक पुस्तक में बहुत ही खूबसूरती से पिरोया है। इंडियन म्यूज़िक नाम की उनकी बुक में लगभग 760 तस्वीरें हैं। इनमें से अधिकांश तस्वीरें उन्होंने खुद ही खींची हैं। दूसरे देशों में भारतीय संस्कृति को लेकर ऐसा उत्साह और आकर्षण वाकई आनन्द से भर देने वाला है।

साथियो! कुछ सप्ताह पहले एक और खबर आई थी, जो हमें गर्व से भरने वाली है। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि **बीते 8 वर्षों में भारत से म्यूज़िकल इनस्ट्रूमेंट का एक्सपोर्ट साढ़े तीन गुना बढ़ गया है। इलेक्ट्रिकल म्यूज़िकल इनस्ट्रूमेंट की बात करें तो इनका एक्सपोर्ट 60 गुना बढ़ा है। इससे पता चलता है कि भारतीय संस्कृति और संगीत का क्रेज़ दुनियाभर में बढ़ रहा है। इंडियन म्यूज़िकल इनस्ट्रूमेंट के सबसे बड़े खरीददार यूएसए, जर्मनी, फ्रांस, जापान और यूके जैसे विकसित देश हैं।** हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है कि

हमारे देश में म्यूज़िक, डांस और आर्ट की इतनी समृद्ध विरासत है।

साथियो! महान मनीषी कवि भर्तृहरि को हम सब उनके द्वारा रचित 'नीति शतक' के लिए जानते हैं। एक श्लोक में वे कहते हैं कि कला, संगीत और साहित्य से हमारा लगाव ही मानवता की असली पहचान है। वास्तव में हमारी संस्कृति इसे ह्यूमेनिटी से भी ऊपर डिविनिटी तक ले जाती है। वेदों में सामवेद को तो हमारे विविध संगीतों का स्रोत कहा गया है। माँ सरस्वती की वीणा हो, भगवान श्रीकृष्ण की बाँसुरी हो, या फिर भोलेनाथ का डमरू, हमारे देवी-देवता भी संगीत से अलग नहीं हैं। **हम भारतीय, हर चीज़ में संगीत तलाश ही लेते हैं। चाहे वह नदी की कलकल हो, बारिश की बूँदें हों, पक्षियों का कलरव**
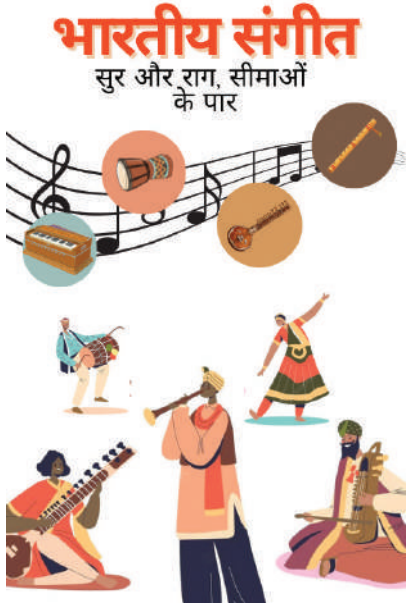
हो या फिर हवा का गूँजता स्वर, हमारी सभ्यता में संगीत हर तरफ समाया हुआ है। यह संगीत न सिर्फ़ शरीर को सुकून देता है, बल्कि मन को भी आनन्दित करता है। संगीत हमारे समाज को भी जोड़ता है। यदि भांगड़ा और लावणी में जोश और आनन्द का भाव है, तो रविन्द्र संगीत, हमारी आत्मा को आह्लादित कर देता है। देशभर के आदिवासियों की अलग-अलग तरह की संगीत परम्पराएँ हैं। ये हमें आपस में मिलजुल कर और प्रकृति के साथ रहने की प्रेरणा देती हैं।

साथियो! संगीत की हमारी विधाओं ने न केवल हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है, बल्कि दुनियाभर के संगीत पर अपनी अमिट छाप भी छोड़ी है। भारतीय संगीत की ख्याति विश्व के कोने-कोने में फ़ैल चुकी है। मैं आप लोगों को एक और ऑडियो क्लिप सुनाता हूँ।

(स्कैन करें और सुनें।)

लिडि-क्रो-यू
समृद्ध नागा विरासत के संरक्षक

आप सोच रहे होंगे कि घर के पास में किसी मन्दिर में भजन–कीर्तन चल रहा है, लेकिन ये आवाज़ भी आप तक भारत से हजारों मील दूर बसे साउथ अमेरिका देश गयाना से आई है। 19वीं और 20वीं सदी में बड़ी संख्या में हमारे यहाँ से लोग गयाना गए थे। वे यहाँ से भारत की कई परम्पराएँ भी अपने साथ ले गए थे। उदाहरण के तौर पर, जैसे हम भारत में होली मनाते हैं, गयाना में भी होली का रंग सिर चढ़कर बोलता है। जहाँ होली के रंग होते हैं, वहाँ फगवा, यानी फगुआ का संगीत भी होता है। गयाना के फगवा में वहाँ भगवान राम और भगवान कृष्ण से जुड़े विवाह के गीत गाने की एक विशेष परम्परा है। इन गीतों को चौताल कहा जाता है। इन्हें उसी प्रकार की धुन और हाई पिच पर गाया जाता है, जैसा हमारे यहाँ होता है। इतना ही नहीं, गयाना में चौताल कम्पिटिशन भी होता है। इसी तरह बहुत सारे भारतीय, विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग फ़िजी भी गए थे। वे पारम्परिक भजन–कीर्तन गाते थे, जिसमें मुख्य रूप से रामचरितमानस के दोहे होते थे। उन्होंने फ़िजी में भी भजन-कीर्तन से

जुड़ी कई मंडलियाँ बना डालीं। फ़िजी में रामायण मंडली के नाम से आज भी दो हज़ार से ज्यादा भजन-कीर्तन मंडलियाँ हैं। इन्हें आज हर गाँव-मोहल्ले में देखा जा सकता है। मैंने तो यहाँ केवल कुछ ही उदाहरण दिए हैं। अगर आप पूरी दुनिया में देखेंगे तो भारतीय संगीत को चाहने वालों की ये लिस्ट काफी लम्बी है।

मेरे प्यारे देशवासियों, हम सब, हमेशा इस बात पर गर्व करते हैं कि **हमारा देश दुनिया में सबसे प्राचीन परम्पराओं का घर है। इसलिए यह हमारी ज़िम्मेदारी भी है कि हम अपनी परम्पराओं और पारम्परिक ज्ञान को संरक्षित करें, उसका सम्वर्धन भी करें और हो सके, उतना आगे भी बढ़ाएँ।** ऐसा ही एक सराहनीय प्रयास हमारे पूर्वोत्तर राज्य नगालैंड के कुछ साथी कर रहे हैं। मुझे ये प्रयास काफी अच्छा लगा, तो मैंने सोचा इसे 'मन की बात' के श्रोताओं के साथ भी शेयर करूँ।

साथियो! नगालैंड में नागा समाज की जीवनशैली, उनकी कला–संस्कृति और संगीत, ये हर किसी को आकर्षित करती है। ये हमारे देश की गौरवशाली विरासत का अहम हिस्सा है। नगालैंड के लोगों का जीवन और उनके स्किल सस्टेनेबल लाइफ़ स्टाइल के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इन परम्पराओं और स्किल को बचाकर अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए वहाँ के लोगों ने एक संस्था बनाई है, जिसका नाम है– 'लिडि-क्रो-यू'। नागा संस्कृति के जो खूबसूरत आयाम धीरे–धीरे खोने लगे थे, 'लिडि-क्रो-यू' संस्था ने उन्हें फिर से पुनर्जीवित करने का काम किया है। उदाहरण के तौर पर नागा लोक-संगीत अपने आप में एक बहुत समृद्ध विधा है। इस संस्था ने नागा संगीत की एलबम्स लॉन्च करने का काम शुरू किया है। अब तक ऐसी तीन एलबम्स लॉन्च की जा चुकी हैं। ये लोग लोक-संगीत, लोक-नृत्य से जुड़ी वर्कशॉप भी आयोजित करते हैं। युवाओं को इन सब चीज़ों के लिए ट्रेनिंग भी दी जाती है। यही नहीं, नगालैंड की पारम्परिक शैली में कपड़े बनाने, सिलाई-बुनाई जैसे जो काम, उनकी भी ट्रेनिंग युवाओं को दी जाती है। पूर्वोत्तर में बेम्बू से भी कितने ही तरह के प्रोडक्ट्स बनाए जाते हैं। नई पीढ़ी के युवाओं को बेम्बू प्रोडक्ट्स बनाने का काम भी सिखाया जाता है।

इससे इन युवाओं का अपनी संस्कृति से जुड़ाव तो होता ही है, साथ ही उनके लिए रोज़गार के नए-नए अवसर भी पैदा होते हैं। नागा लोक-संस्कृति के बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग जानें, इसके लिए भी लिडि-क्रो-यू के लोग प्रयास करते हैं।

साथियो! आपके क्षेत्र में भी ऐसी सांस्कृतिक विधाएँ और परम्पराएँ होंगी। आप भी अपने-अपने क्षेत्र में इस तरह के प्रयास कर सकते हैं। अगर आपकी जानकारी में कहीं ऐसा कोई अनूठा प्रयास हो रहा है, तो आप उसकी जानकारी मेरे साथ भी ज़रूर साझा करिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे यहाँ कहा गया है–

विद्याधनं सर्वधनम् प्रधानम्

अर्थात, कोई अगर विद्या का दान कर रहा है, तो वो समाज हित में सबसे बड़ा काम कर रहा है। **शिक्षा के क्षेत्र में जलाया गया एक छोटा-सा दीपक भी पूरे समाज को रोशन कर सकता है। मुझे यह देखकर बहुत ख़ुशी होती है कि आज देश-भर में ऐसे कई प्रयास किए जा रहे हैं।** यूपी की राजधानी लखनऊ से 70-80 किलोमीटर दूर हरदोई का एक गाँव है बांसा। मुझे इस गाँव के जतिन ललित सिंहजी के बारे में जानकारी मिली है, जो शिक्षा की अलख जगाने में जुटे हैं। जतिनजी ने दो साल पहले यहाँ 'कम्यूनिटी लाइब्रेरी एंड रिसोर्स सेंटर' शुरू किया था। उनके इस सेंटर में हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य, कम्प्यूटर, लॉ और कई सरकारी परीक्षाओं की

तैयारियों से जुड़ी 3000 से अधिक किताबें मौजूद हैं। इस लाइब्रेरी में बच्चों की पसन्द का भी पूरा ख्याल रखा गया है। यहाँ मौजूद कॉमिक्स की किताबें हों या फिर एजुकेशनल टॉय, बच्चों को खूब भा रहे हैं। छोटे बच्चे खेल-खेल में यहाँ नई-नई चीज़ें सीखने आते हैं। पढ़ाई ऑफलाइन हो या फिर ऑनलाइन, करीब 40 वालिंटियर्स इस सेन्टर पर स्टूडेंट को गाइड करने में जुटे रहते हैं। हर रोज़ गाँव के तकरीबन 80 विद्यार्थी इस लाइब्रेरी में पढ़ने आते हैं।

साथियो! झारखण्ड के संजय कश्यपजी भी ग़रीब बच्चों के सपनों को नई उड़ानें दे रहे हैं। अपने विद्यार्थी जीवन में संजयजी को अच्छी पुस्तकों की कमी का सामना करना पड़ा था। ऐसे में उन्होंने ठान लिया कि किताबों की कमी से वे अपने क्षेत्र के बच्चों का भविष्य अंधकारमय नहीं होने देंगे। अपने इसी मिशन की वजह से आज वो झारखण्ड के कई जिलों में बच्चों के लिए 'लाइब्रेरी मैन' बन गए हैं। संजयजी ने जब अपनी नौकरी की शुरुआत की थी, उन्होंने पहला पुस्तकालय अपने पैतृक स्थान पर बनवाया था। नौकरी के दौरान उनका जहाँ भी ट्रांसफर होता था, वहाँ वे ग़रीब और आदिवासी बच्चों की पढ़ाई के लिए लाइब्रेरी खोलने के मिशन में जुट जाते हैं। ऐसा करते हुए उन्होंने झारखण्ड के कई जिलों में बच्चों के लिए लाइब्रेरी खोल दी हैं। लाइब्रेरी खोलने का उनका यह मिशन आज एक सामाजिक आन्दोलन का रूप ले रहा है। संजयजी हों या जतिन जी, ऐसे अनेक प्रयासों के

लिए मैं उनकी विशेष सराहना करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, मेडिकल साइन्स की दुनिया ने रिसर्च और इनोवेशन के साथ ही अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और उपकरणों के सहारे काफी प्रगति की है, लेकिन कुछ बीमारियाँ आज भी हमारे लिए बहुत बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। ऐसी ही एक बीमारी है – मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी! यह मुख्य रूप से एक ऐसी अनुवांशिक बीमारी है, जो किसी भी उम्र में हो सकती है। इसमें शरीर की मांसपेशियाँ कमज़ोर होने लगती हैं। रोगी के लिए रोज़मर्रा के अपने छोटे-छोटे कामकाज करना भी मुश्किल हो जाता है। ऐसे मरीज़ों के

उपचार और देखभाल के लिए बड़े सेवा-भाव की ज़रूरत होती है। हमारे यहाँ हिमाचल प्रदेश में सोलन में एक ऐसा सेन्टर है, जो मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के मरीज़ों के लिए उम्मीद की नई किरण बना है। इस सेन्टर का नाम है – 'मानव मन्दिर', इसे इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी द्वारा संचालित किया जा रहा है। **मानव मन्दिर अपने नाम के अनुरूप ही मानव सेवा की अद्भुत मिसाल है। यहाँ मरीज़ों के लिए ओपीडी और एडमिशन की सेवाएँ तीन-चार साल पहले शुरू हुई थीं। मानव मन्दिर में करीब 50 मरीज़ों के लिए बेड्स की सुविधा भी है। फ़िज़ियोथेरेपी, इलैक्ट्रोथेरेपी और हाइड्रोथेरेपी के साथ-साथ योग-प्राणायाम की मदद से भी यहाँ रोग का उपचार किया जाता है।**

साथियो! हर तरह की हाई-टेक सुविधाओं के जरिए इस केन्द्र में रोगियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का भी प्रयास होता है। मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से जुड़ी एक चुनौती, इसके बारे में जागरूकता का अभाव भी है। इसीलिए यह केन्द्र हिमाचल प्रदेश ही नहीं, देशभर में मरीज़ों के लिए जागरूकता शिविर भी आयोजित करता है। सबसे ज्यादा हौसला देने वाली बात यह है कि **इस संस्था का प्रबन्धन मुख्य रूप से इस बीमारी से पीड़ित लोग ही कर रहे हैं,** जैसे सामाजिक कार्यकर्ता उर्मिला बाल्दीजी, इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी की अध्यक्ष बहन संजना गोयलजी और इस एसोसिएशन के गठन में अहम भूमिका निभाने वाले श्रीमान विपुल गोयलजी, इस संस्थान के लिए बहुत अहम भूमिका निभा रहे हैं। मानव मन्दिर को हॉस्पिटल और रिसर्च सेन्टर के तौर पर विकसित करने की कोशिशें भी ज़ारी हैं। इससे यहाँ मरीज़ों को और बेहतर इलाज मिल सकेगा। मैं इस दिशा में प्रयासरत सभी लोगों की हृदय से सराहना करता हूँ, साथ ही मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी का सामना कर रहे सभी लोगों की बेहतरी की कामना करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 'मन की बात' में हमने देशवासियों के जिन रचनात्मक और सामाजिक कार्यों की चर्चा की, वो देश की ऊर्जा और उत्साह के उदाहरण हैं। आज हर देशवासी किसी-न-किसी क्षेत्र में, हर स्तर पर देश के लिए कुछ अलग से काम करने का प्रयास कर रहा है। आज की चर्चा में ही हमने देखा, G20 जैसे अन्तरराष्ट्रीय प्रयोजन में हमारे एक बुनकर साथी ने अपनी ज़िम्मेदारी समझी, उसे निभाने के लिए आगे आए। इसी तरह कोई **पर्यावरण के लिए प्रयास कर रहा है, कोई पानी के लिए काम कर रहा है, कितने ही लोग शिक्षा, चिकित्सा और साइन्स टेक्नोलॉजी से लेकर संस्कृति-परम्पराओं तक असाधारण काम कर रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि आज हमारा हर नागरिक अपने कर्त्तव्य को समझ रहा है, जब ऐसी कर्त्तव्य भावना किसी राष्ट्र के नागरिकों में आ जाती है, तो उसका स्वर्णिम भविष्य अपने आप तय हो जाता है और देश के ही स्वर्णिम भविष्य में हम सबका भी स्वर्णिम भविष्य है।**

मैं एक बार फिर देशवासियों को उनके प्रयासों के लिए नमन करता हूँ। अगले महीने हम फिर मिलेंगे और ऐसे ही कई और उत्साहवर्धक विषयों पर ज़रूर बात करेंगे। अपने सुझाव और विचार ज़रूर भेजते रहिएगा। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद !

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारत की G20 अध्यक्षता

सुधार, सद्भाव और आशा की अध्यक्षता

“G20 की अध्यक्षता हमारे लिए एक बड़ी ऑपर्चुनिटी बनकर आई है। हमें इस मौके का पूरा उपयोग करते हुए ग्लोबल गुड पर फ़ोकस करना है। चाहे पीस हो या यूनिटी, पर्यावरण को लेकर संवेदनशीलता की बात हो, या फिर सस्टेनेबल डेवलपमेंट की, भारत के पास इनसे जुड़ी चुनौतियों का समाधान है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“G20 प्रेसीडेंसी चुनौतियों को अवसरों में बदलने का मौका प्रदान करती है, ख़ासकर उन क्षेत्रों में, जहाँ राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय प्रयास समाविष्ट होते हैं। हमारी अध्यक्षता का सार- ‘एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य’ के विचार में देखा जा सकता है, जो हमारी साझा प्राथमिकताओं, सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता और एकीकृत लक्ष्यों को उजागर करता है।”

-अमिताभ कान्त
G20 शेरपा, भारत

भारत का 20 देशों के समूह, G20 की अध्यक्षता सम्भालना इतिहास रचने जैसा है। यह सभी भारतीयों के लिए गर्व का क्षण है, क्योंकि दुनिया की निगाहें हम पर हैं। अब से एक साल तक, भारत दुनिया की दो-तिहाई आबादी, विश्व के तीन चौथाई व्यापार और विश्व सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 85 प्रतिशत के लिए एजेंडा तय करेगा।

यह महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी हमें ऐसे समय में मिली है, जब दुनिया महामारी, भू-राजनीतिक तनाव और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का एक साथ सामना कर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के कार्यकारी बोर्ड के वर्तमान अध्यक्ष, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में गैर-स्थायी सदस्य (और दिसम्बर के महीने के लिए इसके अध्यक्ष) और G20 के अध्यक्ष के रूप में भारत एक प्रगतिशील, सस्टेनेबल, और शान्तिपूर्ण भविष्य का ब्लूप्रिन्ट प्रदान करने के लिए पूरी तरह तैयार है।

जब स्वास्थ्य की बात आती है तो दुनिया आज भारत को सम्मान की दृष्टि से देखती है। आयुर्वेद और योग के हमारे पारम्परिक ज्ञान के प्रति नया उत्साह और विश्वास है। भारत को ‘दुनिया की फ़ार्मेसी’ माना जाता है; वर्ष 2013-14 की तुलना में हमारे फ़ार्मा निर्यात में 103 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत की कोविड-19 महामारी प्रतिक्रिया और टीकाकरण के प्रयासों की विश्व स्तर पर WHO, संयुक्त राष्ट्र और इंटरनेशनल मॉनेटरी फ़ण्ड द्वारा सराहना की गई। देश के कई क्षेत्रों और इलाकों में कोविड-19 वैक्सीन की दो अरब से अधिक ख़ुराक सुलभ कराने के साथ-साथ भारत ने ‘वैक्सीन मैत्री’ पहल के तहत 150 से अधिक देशों को टीकों का निर्यात भी किया, जो पूरे विश्व की देखभाल करने के भारत के लोकाचार के अनुरूप है।

जलवायु परिवर्तन के सम्बन्ध में, भारत क्लाइमेट एक्शन की ओर कदम बढ़ा रहा है। भारत के निरन्तर प्रयासों ने यह सुनिश्चित किया है कि इसका प्रति व्यक्ति CO_2 उत्सर्जन वैश्विक औसत (4.5 टन) की तुलना में बहुत कम (1.8 टन) है। आज, भारत अक्षय ऊर्जा क्षमता की दृष्टि से दुनिया का चौथा सबसे बड़ा देश है, यहाँ तक कि भारत G20 समूह का एकमात्र राष्ट्र है जो पेरिस जलवायु समझौते के अपने राष्ट्रीय निर्धारित योगदान (NDC) को पूरा करने के रास्ते पर है। वैश्विक जन आन्दोलन के रूप में मिशन LiFE ‘लाइफ़स्टाइल फ़ॉर एनवायरनमेंट’ का आरम्भ और अन्तरराष्ट्रीय सौर गठबन्धन की मेज़बानी पृथ्वी के एनर्जी ट्रांज़िशन में अग्रणी के रूप में भारत की सक्रिय भूमिका का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जब प्राकृतिक आपदाओं और क्षेत्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय संकटों की गम्भीरता को कम करने की बात आती है, तो भारत ‘फ़र्स्ट रेस्पॉन्डर’ के रूप में उभर रहा है, जो अग्रणी शक्ति की भूमिका निभाने की उसकी बढ़ती क्षमता और इच्छा को दर्शाता है। संकटों को रोकने या कम करने के लिए अपने संसाधनों का योगदान देकर भारत अन्तरराष्ट्रीय

व्यवस्था में एक ज़िम्मेदार कार्यकर्ता के रूप में अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर रहा है।

भारत आज वैश्विक चुनौतियों को हल करने और इन प्रयासों को निर्देशित करने वाले नियमों, मानदण्डों और प्रक्रियाओं को आकार देने में बहुत बड़ी भूमिका निभा रहा है और यह विश्वसनीयता बहुत कुछ इस बात से पैदा होती है कि हम अपने देश में क्या हासिल कर पाए हैं। उदाहरण के लिए, जिस तरह से भारत ने विकास, समावेशन, शासन-विधि, ईज़ ऑफ़ बिज़नेस तथा ईज़ ऑफ़ लिविंग के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग किया है, वह दुनिया के लिए अनुकरणीय बन गया है। चाहे वह नवाचार, प्रौद्योगिकी, उद्यमिता, अन्तरिक्ष, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक तथा वित्तीय समावेशन, शिक्षा या आपदा प्रबन्धन हो, भारत हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है।

G20 के अध्यक्ष के रूप में भारत 'फ़र्स्ट वर्ल्ड' या 'थर्ड वर्ल्ड' के स्थान पर 'वन वर्ल्ड' की वकालत कर रहा है। भारत द्वारा की गई सभी पहलों में विश्व कल्याण का विचार गहराई से निहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के इस मार्गदर्शक सिद्धान्त पर चलते हुए आज भारत न केवल ग्लोबल साउथ की आवाज़ बन चुका है, बल्कि दुनिया भर में कई बहुपक्षीय गठबन्धनों का एक पक्षकार भी बन गया है। संयुक्त राष्ट्र के एक प्रमुख सदस्य, G-7 के लिए अक्सर आमंत्रित, शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य और BRICS, I2U2 (भारत, इज़राइल, US, UAE) तथा IBSA (भारत-ब्राज़ील-दक्षिण अफ्रीका) के संस्थापक सदस्य के रूप में भारत राष्ट्रों के समुदाय में एक प्रमुख हितधारक बन गया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण से निर्देशित भारत पहले से कहीं अधिक अन्तरराष्ट्रीय ज़िम्मेदारियों को उठाने की इच्छा दिखा रहा है और वैश्विक मंच पर नेतृत्व की भूमिका निभा रहा है। भारत एक साझा उद्देश्य और बेहतर भविष्य के लिए समूची दुनिया को एक साथ लाने की परिकल्पना पर काम कर रहा है और दुनिया को दिए भारत के मन्त्रों से यह स्पष्ट होता है, चाहे वह 'वन वर्ल्ड, वन ग्रिड' हो, 'वन अर्थ, वन हेल्थ', या G20 थीम 'वन अर्थ, वन फ़ैमिली, वन फ़्यूचर'।

विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की G20 की अध्यक्षता G20 एजेंडे पर अपनी क्षमता दिखाने का अनूठा अवसर प्रदान करती है। यह दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ भारत के अद्वितीय विकास मॉडल को प्रस्तुत कर अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व रखने वाले अत्यावश्यक मुद्दों पर वैश्विक एजेंडे में योगदान करने का अवसर है; एक ऐसा मॉडल, जिसका उद्देश्य विश्व के प्रत्येक नागरिक को पृथ्वी के संरक्षण और प्रगति में भागीदार बनाना है। यहाँ तक कि भारत की G20 अध्यक्षता का लोगो भी जनभागीदारी का परिणाम है और भारत की G20 प्रेसीडेंसी वेबसाइट में नागरिकों के सुझावों के लिए एक खण्ड है, जो जन-सामान्य को G20 से जोड़ता है।

जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा है, G20 की अध्यक्षता न केवल कूटनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि इसे एक ज़िम्मेदारी के रूप में भी देखा जाना चाहिए। दुनिया लोकतन्त्र, विविधता, स्वदेशी दृष्टिकोण और समावेशी सोच के हमारे सदियों पुराने विचारों में अपनी सभी चुनौतियों का समाधान ढूँढ रही है। भारत का G20 एजेंडा विश्व कल्याण और प्रगति की मार्गदर्शक दृष्टि के साथ समावेशी, महत्त्वाकांक्षी, कार्रवाई-उन्मुख और निर्णायक होगा।

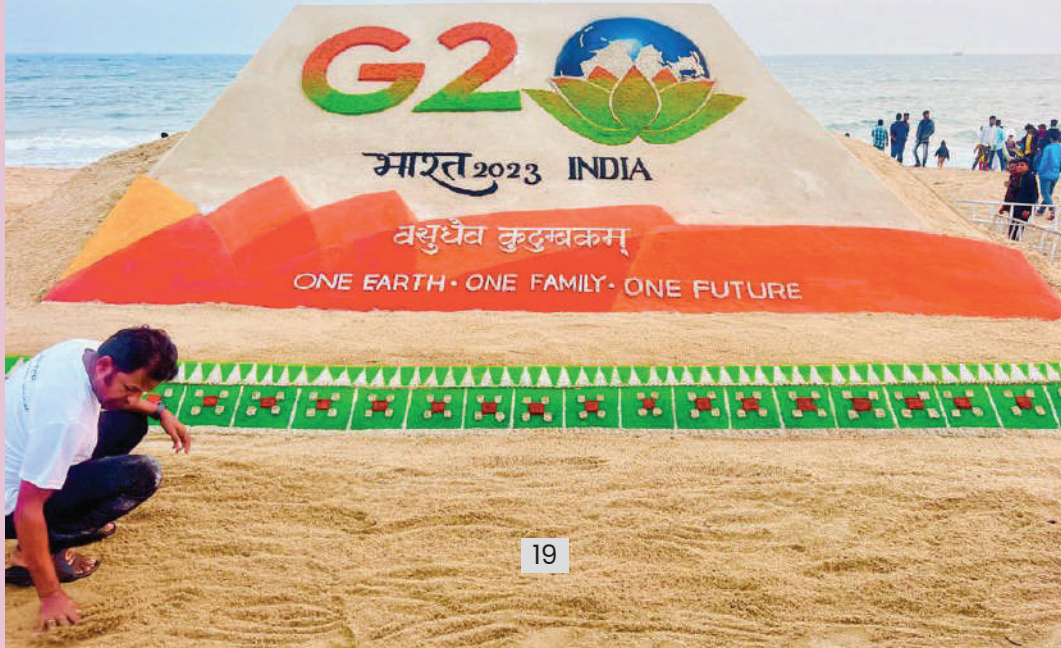

क्या है G20?

वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए वित्त मंत्रियों और केन्द्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए एक मंच के रूप में एशियाई वित्तीय संकट के बाद 1999 में ग्रुप ऑफ ट्वेंटी या G20 की स्थापना की गई थी। 2007 के वैश्विक-आर्थिक और वित्तीय संकट के मद्देनजर G20 को राष्ट्राध्यक्षों/सरकार के प्रमुखों के स्तर पर अपग्रेड किया गया था और 2009 में इसे एक 'अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख मंच' का दर्जा दिया गया।

G20 में 19 देश शामिल हैं, जिनमें अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यूके और यूएसए और यूरोपीय संघ शामिल हैं। भारत ने अतिथि देशों के रूप में बाँग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात को आमंत्रित करने का फैसला किया है।

G20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक रोटेटिंग प्रेसीडेंसी के नेतृत्व में आयोजित किया जाता है। भारत ने 1 दिसम्बर, 2022 से 30 नवम्बर, 2023 तक एक वर्ष के लिए G20 की अध्यक्षता ग्रहण की है।

G20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं: फ़ाइनेंस ट्रैक और शेरपा ट्रैक। वित्तमंत्री और केन्द्रीय बैंक के गवर्नर फ़ाइनेंस ट्रैक का नेतृत्व करते हैं, जबकि शेरपा शेरपा ट्रैक का नेतृत्व करते हैं। श्री अमिताभ कान्त प्रेसीडेंसी वर्ष के दौरान भारत के G20 शेरपा हैं।

कई अन्तरराष्ट्रीय संगठनों (IOs) के प्रमुख भी इसमें भाग लेते हैं। इनमें UN, IMF, WB, WHO, WTO, ILO, FSB और OECD और क्षेत्रीय संगठनों (AU, AUDA-NEPAD और ASEAN) के अध्यक्ष शामिल हैं। भारत ने अपनी *G20* अध्यक्षता में, नियमित IOs के अलावा, *ISA, CDRI* और *ADB* को अतिथि IOs के रूप में आमंत्रित किया है।

इसके अलावा ऐसे एंगेजमेंट समूह होते हैं, जो G20 देशों की सिविल सोसाइटीज़, सांसदों, विचारकों, महिलाओं, युवाओं, श्रमिकों, व्यवसायों और शोधकर्ताओं को एक साथ लाते हैं। भारत ने अपनी अध्यक्षता में एक नए एंगेजमेंट ग्रुप, स्टार्टअप20 का प्रस्ताव रखा है।

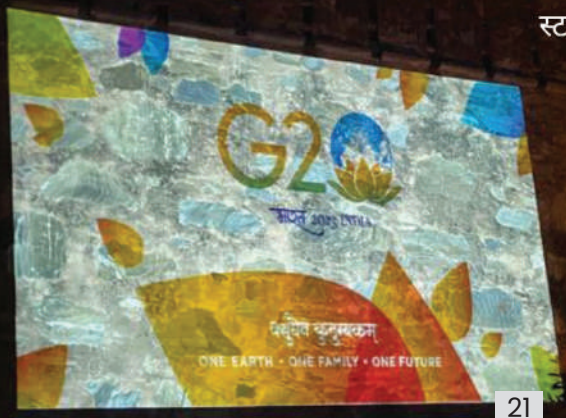

भविष्य की राह : भारत और G20

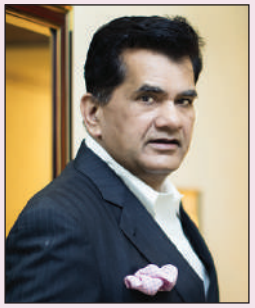

अमिताभ कान्त
G20 शेरपा, भारत

हमारा देश 'अमृत काल' में प्रवेश कर चुका है। यह विकास और सामाजिक प्रगति की हमारी परिवर्तनकारी यात्रा को चिह्नित करेगा। यह वैश्विक विकास पथ के लिए मानक भी निर्धारित करेगा। भारत, जो अब विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और अन्तरराष्ट्रीय समुदाय में एक प्रमुख नैतिक शक्ति है, उसका G20 की अध्यक्षता सम्भालना बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह ऐसे समय हुआ है, जब बढ़ती मुद्रास्फीति, भू-राजनीतिक तनाव और जलवायु संकट जैसी चुनौतियों ने कार्रवाई-उन्मुख और समावेशी लक्ष्यों की तत्काल आवश्यकता पैदा की है, जिन्हें हमें त्वरित तरीके से प्राप्त करना चाहिए। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि भारत के लिए G20 अध्यक्षता के मायने क्या हैं?

G20 में शामिल देशों का दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद में 85 प्रतिशत हिस्सा है। इस समूह की अध्यक्षता हमेशा विशेष सम्मान और बड़ी ज़िम्मेदारी की स्थिति रही है। यह चुनौतियों को अवसरों में बदलने का मौका प्रदान करती है, खासकर उन क्षेत्रों में, जहाँ राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय प्रयास समाविष्ट होते हैं। उदाहरण के लिए भारत के विकास के मॉडल ने विश्व-स्तर पर सामाजिक प्रगति और समावेशी विकास के लिए मानदण्ड निर्धारित किए हैं। G20 के अध्यक्ष के रूप में भारत विकसित और विकासशील देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए एक सेतु के रूप में उभरेगा। बाली शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री की टिप्पणियों से प्रेरित होकर हमारी अध्यक्षता समावेशी, महत्त्वाकांक्षी, निर्णायक और कार्रवाई-उन्मुख होने का लक्ष्य रखेगी। हमारे प्रयासों के मूल में इस दशक में सस्टेनेबल डेवेलपमेंट गोल्स (SDGs) को प्राप्त करने के लिए समावेशी विकास और त्वरित प्रगति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता निहित है। हमारी अध्यक्षता का सार – 'एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य' के विचार में देखा जा सकता है, जो हमारी साझा प्राथमिकताओं, सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता और एकीकृत लक्ष्यों को उजागर करता है।

हमारी अध्यक्षता में प्रमुख प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में मिशन LiFE (लाइफ़स्टाइल फ़ॉर एनवायरनमेंट), SDGs के लिए वित्त पोषण, हरित ऊर्जा को बढ़ावा, खाद्य सुरक्षा और खाद्यान्न तथा ऊर्जा के लिए विश्वसनीय आपूर्ति शृंखला सुनिश्चित करना और डिजिटल परिवर्तन शामिल हैं। इन प्राथमिकताओं के अनुसार किए जाने वाले कार्यों से

दुनिया भर के लोग लाभान्वित होंगे। डिजिटल बुनियादी ढाँचे का लाभ उठाने वाले संसाधनों और सेवाओं की सबके लिए सुलभता, महामारी के बाद की दुनिया में इन्क्लूज़िव रिकवरी को बढ़ावा दे सकती है। इस सम्बन्ध में भारत के सभी क्षेत्रों में डिजिटल परिवर्तन ने एक वैश्विक मानदण्ड स्थापित किया है। तकनीक-सक्षम शिक्षा से लेकर एकीकृत भुगतान प्रणाली और आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत डिजिटल स्वास्थ्य तक, भारत ने लाभार्थी की पहचान और लाभ को निर्बाध रूप से अन्तरित करने के लिए एक तन्त्र बनाया है।

हमारी अध्यक्षता के दौरान एक अन्य प्रमुख तत्व है महिलाओं के नेतृत्व में विकास। इसके अन्तर्गत हम महिलाओं के नेतृत्व में विकास के लिए आदर्श बदलाव लाने का प्रयास करेंगे। महिलाओं को विकास के केन्द्र में होना चाहिए और हमें इस एजेंडे को तब तक आगे बढ़ाना चाहिए, जब तक कि यह एक प्रतिमान न बन जाए। बहुपक्षीय संगठनों में सुधार और SDGs को हासिल करने के लिए वित्त पोषण सुनिश्चित करने की दिशा में काम करना भी महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता है। आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर एक नए कार्य समूह का गठन हमारी अध्यक्षता में एक अनूठा योगदान होगा। इस कार्यकारी समूह में हम उन तरीकों पर सहमति को मज़बूत करने का लक्ष्य रखेंगे, जिनसे हम सामूहिक रूप से राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आपदाओं से निपटने की क्षमता हासिल कर सकें।

G20 अध्यक्षता, कार्रवाई के लिए आम सहमति के साथ, दुनिया के लिए कार्रवाई-उन्मुख समावेशी और सस्टेनेबल एजेंडा को आगे बढ़ाने के लिए एक अनूठा अवसर है। हमारी जनसांख्यिकीय ताकत, नवाचार के लिए हमारी क्षमता, और हमारी विविधता एक वैश्विक नेता के रूप में उभरने में मददगार है। G20 मंच के माध्यम से डिजिटल परिवर्तन की अपनी यात्रा को साझा करके भारत वैश्विक डिजिटल क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। भारत के G20 की अध्यक्षता सम्भालने पर समूची दुनिया 'एक भविष्य' को आकार देने के लिए टकटकी लगाएँ उसकी ओर देख रही है।

आम-जन तक पहुँच रहा है G20

प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में भारत द्वारा G20 की अध्यक्षता सम्भालने के बारे में बात की और बताया कि कैसे देश के विभिन्न हिस्सों से कई लोगों ने उन्हें इस बात पर खुशी और गर्व व्यक्त करते हुए पत्र भेजे हैं कि भारत इतने बड़े और महत्त्वपूर्ण शिखर सम्मेलन की मेज़बानी करने जा रहा है, पर इन पत्रों में सब से अलग था पत्र के साथ तेलंगाना के एक बुनकर द्वारा प्रधानमंत्री को भेजा गया एक अनूठा उपहार।

इस बारे में और जानने के लिए हमारी दूरदर्शन टीम ने ***येल्दी हरिप्रसाद*** *से सम्पर्क किया।*

तेलंगाना के राजन्ना सिरसिला ज़िले के रहने वाले श्री हरिप्रसाद इस बात से बहुत खुश थे कि भारत अगले साल G20 शिख़र सम्मेलन की मेज़बानी करेगा और इस उपलब्धि को अपने तरीके से मनाने के लिए उन्होंने G20 लोगो को अपने हाथों से एक कपड़े पर बुनकर प्रधानमंत्री को उपहार के रूप में भेजने का फैसला किया।

"एक समय था जब भारत के दूरदराज़ के क्षेत्रों और गाँवों में कोई नहीं जानता था कि G20 क्या है। अब, हमारे प्रधानमंत्री के प्रेसीडेंसी सम्भालने और 20 देशों के बीच बैठकों से जनता में जागरूकता आई है," उन्होंने कहा। श्री हरिप्रसाद को बुनाई की यह अद्भुत प्रतिभा अपने पिता से विरासत में मिली है और आज वे पूरी लगन से इस पेशे में लगे हुए हैं। इससे पहले उन्होंने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाने के लिए एक रेशमी कपड़े पर एक कलाकृति बनाई थी, जिसमें तिरंगे में भारत का नक्शा और तेलुगु लिपि में राष्ट्रगान था।

"मैं राजन्ना सिरसिला का एक साधारण गरीब आदमी हूँ। मैंने G20 का लोगो बनाया और मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में इसका ज़िक्र किया। हमारे प्रधानमंत्री के नेतृत्व में विकास हो रहा है और अन्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष भी हमारे प्रधानमंत्री के कुशल नेतृत्व की प्रशंसा कर रहे हैं। एक भारतीय होने के नाते मुझे गर्व महसूस हो रहा है कि भारत G20 की अध्यक्षता करेगा," श्री हरिप्रसाद ने कहा।

भारत ने ग्रहण की G20 की अध्यक्षता

विश्व नेताओं की प्रतिक्रिया

"2023 में G20 का नेतृत्व सम्भालने के लिए भारत को बहुत शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में G20 आगे बढ़ेगा। भारत के एक मित्र के रूप में इंडोनेशिया अगले वर्ष भारत की G20 अध्यक्षता की सफलता का समर्थन करने के लिए तैयार है।"

जोको विडोडो, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति

"भारत यूनाइटेड स्टेट्स का एक मज़बूत भागीदार है और मैं भारत के G20 की अध्यक्षता के दौरान अपने मित्र प्रधानमंत्री मोदी का समर्थन करने के लिए तत्पर हूँ। हम साथ मिलकर जलवायु, ऊर्जा और खाद्य संकट जैसी साझा चुनौतियों से निपटते हुए सतत और समावेशी विकास को आगे बढ़ाएँगे।"

जो बाइडेन , अमरीका के राष्ट्रपति

"भारत को #G20 अध्यक्षता की शुरुआत पर बधाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ काम करने के लिए मैं उत्सुक हूँ, क्योंकि उनका देश 2023 में दुनिया की सबसे अधिक अत्यावश्यक चुनौतियों का समाधान करने के तरीके पर चर्चा करेगा।"

चार्ल्स मिशेल, यूरोपियन काउंसिल के अध्यक्ष

"हमें वैश्विक चुनौतियों का सामना करने और निष्पक्ष और समावेशी हरित और डिजिटल बदलाव सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करते रहना चाहिए। वन वर्ल्ड, वन फैमिली, वन फ्यूचर। #G20India प्रेसीडेंसी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को शुभकामनाएँ। आप स्पेन के समर्थन पर भरोसा कर सकते हैं!"

पेड्रो सांचेज़, स्पेन के प्रधानमंत्री

"बधाई हो, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, G20 की अध्यक्षता सम्भालने पर। अगले साल G7 की प्रेसीडेंसी के रूप में, मैं अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए आपके साथ मिलकर काम करने की भी आशा करता हूँ।"

फ़ुमिओ किशिदा, जापान के प्रधानमंत्री

"वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ़्यूचर। भारत ने #G20India की अध्यक्षता सम्भाल ली है! मुझे विश्वास है कि मेरे मित्र नरेन्द्र मोदी शान्ति और अधिक सस्टेनेबल दुनिया के निर्माण के लिए हमें एक साथ लाएँगे।"

इमैनुएल मैक्रों, फ्रांस के राष्ट्रपति

विक्रम-एस : भारत का पहला स्वदेशी निजी अन्तरिक्ष प्रक्षेपण

भारत में अन्तरिक्ष-प्रौद्योगिकी के लिए एक नए युग की शुरुआत

#प्रारंभ- एक नई शुरुआत, एक नया सवेरा

प्रारंभ भारत के पहले स्वदेशी निजी रॉकेट **विक्रम-एस** का मिशन नाम है, जो स्काईरूट एयरोस्पेस का एकल चरण सबऑर्बिटल अन्तरिक्ष प्रक्षेपण वाहन है। प्रारंभ का अर्थ है शुरुआत, भारत में निजी अन्तरिक्ष क्षेत्र के लिए एक नए युग का प्रतीक और स्काईरूट के लिए पहला मिशन। स्काईरूट, इसरो और अन्तरिक्ष नियामक IN-SPACe के बीच तालमेल मिशन की सफलता का आधार है।

2020 के अन्त में ज़मीनी कार्य शुरू होने के साथ विक्रम-एस को दो साल के रिकॉर्ड समय के भीतर विकसित किया गया है। विक्रम-एस ठोस-ईंधन वाले प्रणोदन, अत्याधुनिक एवियोनिक्स और एक पूर्ण-कार्बन फ़ाइबर कोर संरचना द्वारा संचालित है।

विक्रम-एस : ग्राहक पेलोड

स्पेस किड्ज इंडिया बाज़ूमक
अर्मेनिया एन-स्पेस टेक इंडिया

विक्रम-एस : रोचक तथ्य

दुनिया के पहले समग्र अन्तरिक्ष प्रक्षेपण वाहनों में से एक स्पिन स्थिरता के लिए 3डी-मुद्रित ठोस थ्रस्टर्स कक्षीय अन्तरिक्ष वाहनों की भविष्य की विक्रम श्रृंखला के लिए तकनीक का 80 प्रतिशत परीक्षण अन्तरिक्ष के लिए सबसे तेज़ और सबसे सस्ती सवारी।

टेलीमेट्री, ट्रैकिंग, जीपीएस, ऑन-बोर्ड कैमरा, डेटा अधिग्रहण और पावर सिस्टम जैसी विक्रम श्रृंखला में एवियोनिक्स सिस्टम का उड़ान-प्रमाणन

विक्रम-एस : महत्त्वपूर्ण आँकड़े

द्रव्यमान : 545 किग्रा

लम्बाई : 6 मीटर

व्यास : 0.375 मीटर

पीक वैक्यूम थ्रस्ट : 7 टन

पीक दहन दबाव: 90 बार

पीक वेग क्षमता :> मैक 5 [हाइपरसोनिक]

पेलोड क्षमता : 83 किग्रा से 100 किमी की ऊँचाई

स्काईरूट एरोस्पेस की स्पेस-फ़्लाइट सफलता

अन्तरिक्ष को सबकी पहुँच में लाने के लिए सक्यरुट एरोस्पेस स्पेस-फ़्लाइट को किफायती, विश्वसनीय और नियमित बनाने का प्रयास कर रहा है। अन्तरिक्ष क्षेत्र में फुल डयूरेशन स्टेज टेस्ट को सफलतापूर्वक पूरा करना, भारत के पहले निजी क्रायोजेनिक इंजन का परीक्षण करना, पहले निजी तौर पर निर्मित सॉलिड रॉकेट स्टेज का परीक्षण करना और अपर स्टेज फ़ायर टेस्ट में सफल होना जैसी अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल करने के बाद स्काईरूट प्रगति की लहरों पर सवार है।

विक्रम-एस के लॉन्च पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अपने हाल ही के 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री के उनके काम और प्रगति का उल्लेख करने से पता चलता है कि अन्तरिक्ष क्षेत्र का निजीकरण किस तरह इस क्षेत्र को सफलता की ओर ले जा रहा है।

दूरदर्शन की हमारी टीम ने स्काईरूट के बारे में अधिक जानने के लिए इस अन्तरिक्ष स्टार्ट-अप के सह-संस्थापक ***श्री भारत डाका*** *और* ***श्री पवन कुमार चंदाना*** *का साक्षात्कार लिया।*

श्री डाका ने बताया, "2018 के मध्य में, पवन और मैंने भारत में कई दशकों से बने पारिस्थितिकी तंत्र की मदद से निजी लॉन्च वाहन बनाने का यह प्रयास शुरू किया।"

आज, स्काईरूट में हम भारत से दुनिया के लिए उपग्रह प्रक्षेपण सेवाओं को सक्षम करने के लिए कम लागत, ऑन-डिमांड, विश्वसनीय लॉन्च वाहनों के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। हमारी स्थापना के साढ़े चार साल हो चुके हैं और अपनी पूरी यात्रा के दौरान, हमने अपने लॉन्च वाहनों से सम्बन्धित कई विकासात्मक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक जिसे हमने हाल ही में हासिल किया है वह है अन्तरिक्ष में रॉकेट का प्रक्षेपण और उसकी वापसी। हमने विक्रम-एस नामक अपने प्रौद्योगिकी प्रदर्शक रॉकेट को लॉन्च किया, जो अनिवार्य रूप से हमारे कक्षीय प्रक्षेपण वाहनों के लिए बनाई गई 80 प्रतिशत

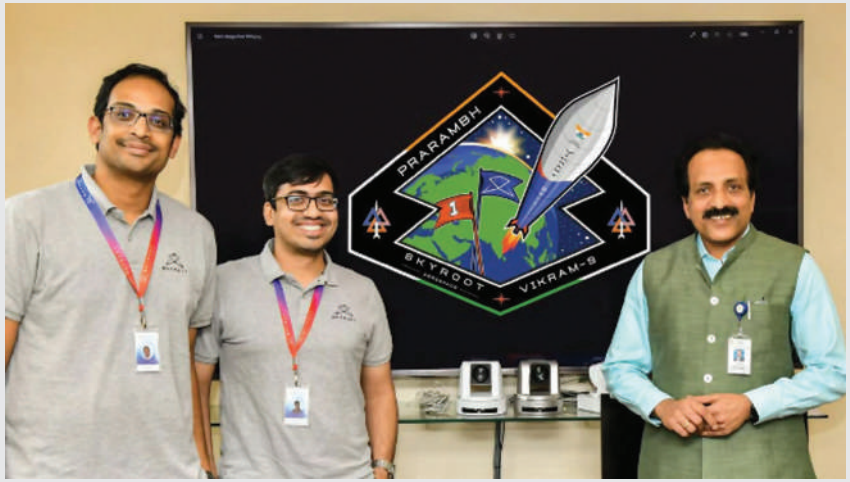

तकनीकों का उपयोग करता है, जैसे कि सॉलिड प्रोपल्शन टेक्नोलॉजी, कक्षीय वाहनों के लिए इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली जैसे टेलीमेट्री सिस्टम, डेटा अधिग्रहण प्रणाली, और सभी प्रौद्योगिकियाँ जो सब-ऑर्बिटल लॉन्च व्हीकल के साथ उड़ान-सिद्ध किए गए हैं। वास्तव में, हमने एक परफ़ेक्ट टेक्स्टबुक लॉन्च किया था, जिसका अर्थ है कि उड़ान प्रोफ़ाइल, प्रिडिक्शन्स और प्रदर्शन पैरामीटर हमारे पूर्वानुमानों से बिल्कुल मेल खाते थे। यह हमें 2023 में हमारे आगामी माइलस्टोन के लिए एक बड़ा बढ़ावा देता है, जो कि अन्तरिक्ष के लिए एक कक्षीय प्रक्षेपण है जहाँ हम अपने विक्रम 1 प्रक्षेपण यान को अन्तरिक्ष में लॉन्च करेंगे, उपग्रहों को कक्षा में स्थापित करने के लिए।

2020 में पेश किए गए केंद्र सरकार के सुधार हमारे प्रयास को बहुत बढ़ावा देने वाले रहे हैं क्योंकि उन्होंने इस डोमेन में वाणिज्यिक निजी प्लेयर की भागीदारी का समर्थन किया है। नई रेगुलेटरी बॉडी, IN-SPACe का गठन हमारे लिए मददगार साबित हुआ क्योंकि इसने स्काईरूट को उन सुविधाओं का उपयोग करने में सक्षम बनाया जो इसरो में उपलब्ध हैं अन्यथा हमें अपने दम पर निर्माण करने के लिए बहुत अधिक लागत आएगी। इसलिए केन्द्र सरकार की पहल और इसरो के IN-SPACe के काम की बदौलत हमारे डेवलपमेंट एक्सपेंडिचर में काफी बचत हुई है।

एक कम लागत वाला अन्तरिक्ष यात्री देश होना भारत के लिए एक अनूठा लाभ है और भारतीय निजी क्षेत्र के लिए भी है। स्काईरूट में हम इसका लाभ उठा रहे हैं और स्पेस एक्सेस सॉल्यूशंस का निर्माण कर रहे हैं, जो भारत और दुनिया के लिए किफायती और ऑन-डिमांड हैं, और सरकार से जबरदस्त समर्थन प्राप्त कर रहे हैं। हमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ बातचीत करने का सौभाग्य मिला है और यह तथ्य कि उन्होंने 'मन की बात' में कई बार हमारे काम और हमारी प्रगति का उल्लेख किया है, आने वाले समय में देश को गौरवान्वित करने के लिए हमें और अधिक सशक्त बनाता है।"

पवन कुमार चंदाना ने विक्रम-एस के लॉन्च के बारे में अपने विचार साझा करते हुए कहा, "पहले हमारे पास बड़े, बस के आकार के उपग्रह हुआ करते थे लेकिन अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ अब अन्तरिक्ष में छोटे उपग्रह हैं और रीसेंट ट्रेंड को ध्यान में रखते हुए, 'कॉन्स्टलेशन्स' ऑफ़ सैटेलाइट्स, जो कि संख्या में अधिक हैं और इसलिए उनका प्रभाव और कवरेज ज़्यादा है, प्रौद्योगिकी छोटे उपग्रहों में स्थानांतरित हो गई है। और उन्हें विभिन्न कक्षाओं में प्रक्षेपित करने के लिए विशिष्ट रॉकेटों की आवश्यकता होती है। अन्तरिक्ष के लिए एक उबर की तरह, इसरो के सहयोग से और विक्रम-एस के प्रक्षेपण के साथ, हम भारत को नए क्षितिज पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

स्काईरूट के संस्थापक से जाने उनके बारे में, स्कैन करें QR कोड

भारत में ड्रोन उद्योग का उदय

दे रहा विचारों को ऊँची उड़ान

“ड्रोन के क्षेत्र में भी भारत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। कुछ दिनों पहले हमने देखा कि कैसे हिमाचल प्रदेश के किन्नौर में ड्रोन के ज़रिए सेब ट्रांसपोर्ट किए गए। ड्रोन टेक्नोलॉजी से हिमाचल के स्वादिष्ट किन्नौरी सेब लोगों तक और जल्दी पहुँचने लगेंगे। इससे हमारे किसान भाई-बहनों का ख़र्चा कम होगा - सेब समय पर मंडी पहुँच पाएगा, सेब की बर्बादी कम होगी।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 2030 तक भारत को वैश्विक ड्रोन-हब बनाने के स्वप्न से प्रेरित होकर सरकार ने, देश में ड्रोन अपनाए जाने को प्रोत्साहन देने के लिए पिछले वर्ष एक बड़ी पहल (ड्रोन नियम, 2021) की थी। इतिहास बताएगा कि यह दशक, भारत में ड्रोन प्रौद्योगिकी के नवाचार और प्रसार का स्वर्ण युग होगा।”

-नील मेहता
निदेशक और सह-संस्थापक,
एस्टीरिया एरोस्पेस और सह-अध्यक्ष-
ड्रोन, FICCI

उड़ान भरने की कल्पना हमेशा से मानव मन को लुभाती रही है, जिसे प्रौद्योगिकी ने हकीकत में बदल दिया है। भारत में इस क्षेत्र में हो रही अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी की तैयारियाँ देश को क्रान्ति के पथ पर अग्रसर कर रही हैं। तेज़ी से उड़ान भरते हुए भारत का ड्रोन सेक्टर अब स्वावलम्बन की यात्रा तय कर रहा है। मानव रहित उड़ान प्रौद्योगिकी ने पिछले कुछ वर्षों में देश भर में इन्नोवेटर की कल्पनाओं को पँख दिए हैं और आज भारत 2030 तक वैश्विक ड्रोन हब बनने के लिए एक पारिस्थितिकी तन्त्र का निर्माण कर रहा है।

ड्रोन, जिनका पहले मुख्यतः युद्ध में उपयोग किया जाता था, अब वही, प्रौद्योगिकी सम्पन्न भारत के लिए एक पारदर्शी, कुशल और कम लागत वाले उपकरण के रूप में सामने आए हैं। ड्रोन सेवाओं को सुलभ बनाने की दिशा में सरकार भी अपने प्रयासों से उद्योगों को इस तकनीक का लाभ उठाने और ड्रोन नवाचार अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है, जिससे इस प्रौद्योगिकी का फ़ायदा हर नागरिक तक पहुँच रहा है। कोविड-19 के दौरान इस फायदे का बड़ा असर देखा गया, जब ड्रोन का इस्तेमाल टीके और दवाएँ पहुँचाने, सैंपल कलेक्शन एवं डिलीवरी, कीटाणुनाशक छिड़काव और लॉकडाउन पैट्रॉल के लिए किया जा रहा था।

शिक्षा, कृषि, मौसम पूर्वानुमान, स्वास्थ्य सेवा, आपदा प्रबन्धन, रक्षा और अन्य क्षेत्रों में निश्चित रूप से प्रभावी ड्रोन प्रौद्योगिकी का उपयोग, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ‘सबका साथ सबका विकास’ की दूरदृष्टि को भी पूरा कर रहा है। दुर्गम स्थानों तक पहुँचने की क्षमता होने के कारण ड्रोन, सरकार तथा विभिन्न संगठनों को अपने क्षितिज का विस्तार करने में सहायता कर रहा हैं। फसल मूल्यांकन और कीटनाशकों के छिड़काव के लिए ‘किसान ड्रोन’, स्वास्थ्य सेवाओं का तन्त्र विकसित करने के लिए ‘आई-ड्रोन’ से लेकर केदारनाथ के पुनर्निर्माण और नमामि गंगे परियोजना तक, ड्रोन का इस्तेमाल देश के समग्र विकास के लिए शुरू हो चुका है। ड्रोन भारत की रक्षा प्रणाली, निगरानी और युद्ध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और आज की आधुनिक अग्रणी ड्रोन क्षमताओं का उपयोग फ्रंटलाइन सैनिकों की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए भी किया जा रहा है।

भारत ड्रोन महोत्सव 2022 का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ‘पीएम स्वामित्व योजना’ का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे ड्रोन तकनीक एक बड़ी क्रान्ति की बुनियाद रख रही है। इस योजना के तहत पहली बार देश के गाँवों की डिजिटल मैपिंग की जा रही है और लोगों को डिजिटल प्रॉपर्टी कार्ड दिए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्नत ड्रोन प्रौद्योगिकी और सहायक नीतियाँ सरकार के ‘मैक्सिमम गवर्नेंस, मिनिमम गवर्नमेंट’ के स्वप्न को साकार करती हैं।

देश के ड्रोन उद्योग की लम्बी छलाँग के पीछे भारत के युवा इन्जीनियर, उद्यमी और नवप्रवर्तक हैं। उभरते ड्रोन स्टार्टअप्स के बीच ड्रोन-ऐज़-अ-सर्विस (डीआरएएएस) को समर्थन और बढ़ावा

"जैसा कि प्रधानमंत्रीजी ने कहा कि भारत अभी दुनिया का ड्रोन हब बनने की स्टेज पर है। इस समय कई ड्रोन इनोवेशन हो रहे है और 2030 - 2040 तक भारत वर्ल्ड ड्रोन लीडर बन सकता है और अब AI की मदद से डिजिटल इंडिया के भारत के लक्ष्य में ड्रोन टेक्नोलॉजी का बड़ा रोल रहेगा।"

-बेष्टा प्रेम साई
सीईओ, VECROS

देने के लिए, 'मिशन ड्रोन शक्ति' की घोषणा की गई है। इसके अलावा, ड्रोन प्रौद्योगिकी से जुड़े युवाओं द्वारा की जा रही पहलों से सरकार को इस तकनीक का लाभ उठाने में मदद मिल रही है। अटल इन्नोवेशन मिशन नेटवर्क (विशेष रूप से अटल टिंकरिंग लैब्स) के माध्यम से युवा ड्रोन प्रौद्योगिकी भी सीख रहे हैं।

डिजिटलस्काई प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से ड्रोन के वाणिज्यिक और औद्योगिक उपयोग को बढ़ावा देने और सुव्यवस्थित करने के लिए ऐतिहासिक लिबरलाइज़्ड ड्रोन नियम 2021 का प्रक्षेपण इस बात का प्रमाण है कि भारत ड्रोन को तेज़ी से अपना रहा है। इतना ही नहीं, 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' और 'मेक इन इंडिया' के तहत ड्रोन के अनुसन्धान, विकास, परीक्षण, निर्माण और संचालन में भारत को वैश्विक केन्द्र बनाने के लिए सरकार ने 120 करोड़ रुपये की कुल प्रोत्साहन राशि

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 100 किसान ड्रोन लॉन्च करते हुए

के साथ ड्रोन और ड्रोन घटकों के लिए पीएलआई योजना भी शुरू की है। नए नियमों और योजनाओं के कारण ड्रोन उद्योग का मूल्य अगले तीन वर्ष में 5,000 करोड़ रुपये से अधिक होने का अनुमान है। वित्त वर्ष 2023-24 में 900 करोड़ रुपये से अधिक की अनुमानित वार्षिक बिक्री के साथ सेवा उद्योग के ड्रोन क्षेत्र में 10,000 से अधिक नौकरियों के अवसर पैदा होने का भी अनुमान है।

इसके अतिरिक्त, भारत सरकार ने देश को आत्मनिर्भर और विश्व-स्तर पर प्रतिस्पर्धी ड्रोन-हब बनाने के लिए कई सुधार किए हैं जैसे - ड्रोन एरोस्पेस मैप 2021 का प्रकाशन जो लगभग 90 प्रतिशत भारतीय हवाई क्षेत्र को 400 फीट तक ग्रीन ज़ोन के रूप में प्रदर्शित करता है; UAS ट्रैफिक मैनेजमेंट पॉलिसी फ्रेमवर्क 2021; ड्रोन प्रमाणन योजना 2022 के तहत निर्माताओं के लिए प्रमाणपत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बनाना; ड्रोन आयात नीति-2022 विदेश निर्मित ड्रोन के आयात पर प्रतिबन्ध लगाना; और ड्रोन स्कूलों की स्थापना कर पायलटों को प्रशिक्षित करना और ड्रोन संचालन के लिए लाइसेंस प्रदान करना है।

नवाचार, प्रौद्योगिकी और इन्जीनियरिंग के मामले में ड्रोन प्रौद्योगिकी की क्षमता का दोहन करने के लिए भारत के समय पर उठाए गए कदमों के साथ-साथ प्रोत्साहन और समर्थन करने वाली नीतियाँ वास्तव में भारत को विश्व की ड्रोन राजधानी बनाने में सक्षम होंगी।

विभिन्न क्षेत्रों में ड्रोन के उपयोग

ड्रोन के व्यावसायिक उपयोग से अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों को ज़बरदस्त लाभ मिलता है।

कृषि :

फसल और मृदा स्वास्थ्य निगरानी, सिंचाई निगरानी, टिड्डी विरोधी संचालन, फसल उत्पादन अनुमान, नदी और नहर क्षरण पर निगरानी इत्यादि

चिकित्सा :

दूर-दराज़ के इलाकों से दवाओं की डिलीवरी और सेम्पल कलेक्शन

प्रशासनिक :

भूमि रिकॉर्ड, शहरी नियोजन और प्रबन्धन, निर्माण योजना अतिक्रमण की निगरानी एवं रोकथाम इत्यादि

रक्षा और सुरक्षा :

निगरानी, कॉम्बैट, दूरदराज़ के क्षेत्रों में संचार, काउन्टर-ड्रोन सिस्टम, सार्वजनिक घोषणाएँ, सम्वेदनशील प्रतिष्ठानों की सुरक्षा, भीड़ प्रबन्धन, आपदा प्रबन्धन, यातायात प्रबन्धन इत्यादि

मीडिया और मनोरंजन :

उच्च गुणवत्ता वाली वीडियोग्राफी, कम ऊँचाई की शूटिंग में बना शोर-गुल, प्रदूषण रहित दुर्घटनाओं का कम जोखिम और दुर्गम स्थानों को फिल्माना इत्यादि।

मानवता के लिए ड्रोन काफी फायदेमंद

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लक्ष्य भारत को हर क्षेत्र में विश्व गुरु बनाना है और इसी विज़न में ड्रोन तकनीक भी शामिल है। आज ड्रोन का अधिकांश उपयोग कृषि, पुलिस निगरानी और सैन्य, वितरण सेवा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में है। भले ही भारत में ड्रोन का उपयोग हाल ही में हुआ हो, भारत का ड्रोन मार्केट कई देशों की तुलना में बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है। देश की ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देने वाले कई स्टार्टअप्स में से TSAW ड्रोन्स भारत में अग्रणी ड्रोन लॉजिस्टिक्स सेवा प्रदाताओं में से हैं, जो अपने ड्रोन का उपयोग करके अन्तिम-मील डिलीवरी करता है।

हमारी दूरदर्शन टीम ने TSAW ड्रोन्स के फाउंडर और सीईओ ***किशन तिवारी*** *से बात की।*

जैसा कि हमारे प्रधानमंत्रीजी कहते हैं, ड्रोन सारी टेक्नोलॉजी का मिश्रण है, जो मानवता के लिए आगे जाकर काफ़ी फायदेमंद होने वाला है। ड्रोन का अच्छा इस्तेमाल कई और क्षेत्रों में हो रहा है। हमारे पास दो तरह के ड्रोन हैं– एक है मारुति मॉडल, जो कम से कम 25 किलो का पेलोड लेकर 40-50 कि.मी. तक जा सकता है। दूसरा है आदरना मॉडल, जो 8-10 किलो का पेलोड लेकर 120 कि.मी. तक जा सकता है। इनका बेनिफिट यह है कि जैसे देहरादून से उत्तरकाशी की दूरी करीब 7 घंटे है, बाई रोड, तो अगर आप वहाँ से आना-जाना करते हैं तो आपको 14-15 घंटे लग जाएँगे, लेकिन वहीं अगर आप कोई सामान इसी रास्ते ड्रोन से भेजते हैं तो केवल 40 मिनट लगते हैं। इन्ही चीज़ों को लेकर हम भारत की कई बड़ी फार्मा और ई-कॉमर्स कम्पनियों के साथ काम भी कर रहे हैं।

उन्होंने आगे बताया, "बाढ़ग्रस्त इलाकों में राहत सामग्री पहुँचाने के लिए पहले हेलीकाप्टर की मदद ली जाती थी, पर अब वही सामान ड्रोन से समय से पहुँचाया जा सकता है, यहाँ तक कि लोगों को डूबने से बचाने के लिए भी लाइफ़ सेविंग सर्विस ड्रोन से भेजे जा सकते है, साथ ही पहाड़ी इलाकों से ब्लड सेम्पल कलेक्शन एंड डिलीवरी की सुविधा भी ड्रोन के आने से बढ़ गई है, इस तरह के कई बेनिफिट्स अब ड्रोन के कारण लोगों को फ्यूचर में मिलेंगे।"

डिजिटल इंडिया लक्ष्य में ड्रोन टेक्नोलॉजी का बड़ा रोल

भारत की ड्रोन शक्ति हर दिन कई गुना बढ़ रही है और सरकारी प्रयासों के साथ इस तकनीक को बढ़ावा देने वाले भारत के ड्रोन स्टार्टअप हैं। कई इनोवेटिव स्टार्टअप्स में से एक VECROS एक भारतीय ड्रोन निर्माता है, जो ऑटोनोमस फ्लाइट में विशिष्टता रखता है।

हमारी दूरदर्शन टीम ने सीईओ ***बेष्टा प्रेम साई*** *से उनकी ड्रोन तकनीक के बारे में बात की।*

"आजकल ड्रोन का मल्टीप्ल केसेस् में इस्तेमाल हो रहा है, पर भारत में ड्रोन पायलट्स् बहुत कम हैं। इसका कारण यह है कि ड्रोन पायलट बनने के लिए जो ट्रेनिंग लेनी पड़ती है, उसका समय बहुत लम्बा होता है और ट्रेनिंग भी कठिन होती है, जो हर कोई नहीं कर पाता, पर हमने ऐसा ड्रोन बनाया है, जो हर कोई चला सकता है, साथ ही एक समय पर एक ड्रोन चलाने के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता होती है, अगर आपको 10 ड्रोन चलाने हैं तो 10 लोगों की ज़रूरत होगी, अब AI की मदद से एक व्यक्ति भी 10 ड्रोन चला सकता है, जो की ड्रोन शोज़ में देखा जाता है।

हमने इस ड्रोन टेक्नोलॉजी को मुख्य रूप से इंस्पेक्शन और मैपिंग के लिए बनाया है। एग्रिकल्चरल इंस्पेक्शन से 200-300 एकड़ खेतों में 10 मिनट में यह पता लगाया जा सकता है कि किस पैच में फ़र्टिलाइज़र और पानी की ज़्यादा आवश्यकता है। इससे किसानों को फ़र्टिलाइज़र्स में 80 प्रतिशत बचत होगी और उनका ओवरयूज़ भी नहीं होगा। इसके अलावा, कंस्ट्रक्शन में बड़ी इमारतों में मैटेरियल्स का मिसयूज़ भी नहीं होगा, क्योंकि ड्रोन इनका 3D मॉडल बनाकर यह पता लगा सकता है कि कितना सैंड और सीमेंट लगा है और कितनी बिल्डिंग्स बनी हैं। हमारे एन्ड-टू-एन्ड टेक्नोलॉजी ड्रोन से यह सब ट्रैक किया जा सकता है। हम यहाँ देश में ही इस ड्रोन को बना रहे है ताकि जो ड्रोन हार्डवेयर है, वो इंडियन कंडीशन के लिए बने और इंडियन यूज़र के लिए लाभदायी रहे।

जैसा कि प्रधानमंत्रीजी ने कहा था कि भारत अभी दुनिया का ड्रोन हब बनने की स्टेज पर है, इस समय कई ड्रोन इनोवेशन हो रहे हैं और 2030-2040 तक भारत वर्ल्ड ड्रोन लीडर बन सकता है। ड्रोन मार्किट 75 प्रतिशत डेटा एनालिसिस पर आधारित है और फ्यूचर में ड्रोन के डेटा से ही क्वालिटी एश्यूरेंस किया जा सकेगा। अब AI की मदद से डिजिटल इंडिया के भारत के लक्ष्य में ड्रोन टेक्नोलॉजी का बड़ा रोल रहेगा।"

ड्रोन की स्वार्म टेक्नोलॉजी ने पसारे पंख

गणतंत्र दिवस 2022 के बीटिंग रिट्रीट समारोह में आईआईटी दिल्ली की इन्क्यूबेशन सुविधा में शुरू हुए भारतीय स्टार्टअप, बॉटलैब डायनेमिक्स ने 1,000 ड्रोन लाइट शो के लिए उड़ाए। बोटलैब डायनेमिक्स रोबोटिक्स के निर्माण पर पाँच वर्षों से अधिक समय से काम कर रहा है।

हमारी दूरदर्शन टीम ने सह-संस्थापक और एमडी, ***डॉ. सरिता अहलावत*** *से उनकी विशेषज्ञता के बारे में बात की।*

"हम लोग ड्रोन स्वार्म टेक्नोलॉजी पर काम रहे हैं। इसमें बहुत सारे ड्रोन एक साथ कनेक्टेड रहते हैं, जो सिर्फ़ एक इन्सान ऑपरेट करता है, जिससे एक व्यक्ति ही 100 ड्रोन ऑपरेट कर सकता है। ड्रोन का एप्लिकेशन जहाँ- जहाँ होता है, वहाँ 3 से ज़्यादा ड्रोन जब यूज़ होते हैं तो उन्हें स्वार्म कहा जाता है।

हम यहाँ इस टेक्नोलॉजी के दो एप्लिकेशन्स का यूज़ करते हैं– एक रेक्रिएशनल पर्पस् के लिए और दूसरा डिफेन्स के लिए। जैसे बॉर्डर पर हज़ारों किलोमीटर की निगरानी करनी होती है, उस समय एक ड्रोन सर्विलेन्स से बेहतर होगा अगर 10-20 ड्रोन का इस्तेमाल किया जाए, जो आपस में और बेस स्टेशन से भी इंटरेक्ट करें, इससे सर्विलेन्स ज़्यादा इफेक्टिव होगा, साथ ही इनमें मशीन लर्निंग के माध्यम से ऑफेन्स एप्लीकेशन भी डाला जा सकता है, जो टेक्नोलॉजी हम यहाँ एक्सप्लोर कर रहे हैं।

ड्रोन के एप्लीकेशन काफ़ी हैं, जैसे एयर टैक्सी द्वारा लोगों को ट्रांसपोर्ट करना, लोजिस्टिक्स, सर्विलेन्स, मेडिसिन और फ़ूड डिलीवरी करना— ड्रोन के साथ कुछ भी ट्रांसपोर्ट करना अब मुमकिन है। मेरा यह माननाा है कि अगली जनरेशन के लिए ड्रोन और भी ज़रूरी हो जाएगा, क्योंकि हर फील्ड में इनका उपयोग हो रहा है, यहाँ तक कि ड्रोन और स्मार्ट भी हो जाएँगे और ऑटोनोमस्ली ऑपरेट करेंगे। उन्हें चलाने के लिए लोगों की ज़रूरत नहीं रहेगी, वह एक ह्यूमनलेस एक्टिविटी हो जाएगी।"

बॉटलैब डायनामिक्स ड्रोन में इस्तेमाल होने वाले पार्ट्स को इंडिजिनसली बनाते हैं। उनका विज़न है कि ड्रोन के सॉफ़्टवेयर से लेकर हार्डवेयर तक की पूरी मैन्युफैक्चरिंग भारत में हो। डॉ. अहलावत बताती हैं, "7500 ड्रोन जोड़कर उन्हें साथ में उड़ाकर, वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने की भी हमारी इच्छा है।"

ड्रोन प्रौद्योगिकी से मिल रही उद्योगों को नई उड़ान

नील मेहता
निदेशक और सह-संस्थापक, एस्टीरिया एरोस्पेस और सह-अध्यक्ष-ड्रोन, FICCI

भारतीय ड्रोन उद्योग दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहा है और देश में हर गुज़रते दिन के साथ ड्रोन के नए-नए उपयोग सामने आ रहे हैं। हालाँकि ड्रोन तकनीक मुख्य रूप से सैन्य बलों की सेवा के लिए विकसित हुई थी, लेकिन आज कृषि, तेल और गैस, खनन, दूरसंचार और स्वास्थ्य सेवा जैसे विविध क्षेत्र इसका उपयोग अपनी परिचालन दक्षता, सुरक्षा और लागत कम करने के लिए कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी में तीव्र गति से हुई प्रगति, इसके अभिनव उपयोग और 5जी, आर्टिफ़ीशियल इंटेलिजेंस (एआई) / मशीन लर्निंग (एमएल), इंटरनेट ऑफ़ थिंग्ज़ (आईओटी) जैसी अन्य उभरती प्रौद्योगिकियों का एकीकरण करके ड्रोन हर तरह के उद्योग को व्यापक रूप से प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 2030 तक भारत को वैश्विक ड्रोन-हब बनाने के स्वप्न से प्रेरित होकर सरकार ने देश में ड्रोन अपनाए जाने को प्रोत्साहन देने के लिए पिछले वर्ष एक बड़ी पहल की थी। आपसी विश्वास के आधार पर 2021 में बनाए गए ड्रोन नियमों से, ड्रोन निर्माताओं, सेवा प्रदाताओं और पायलटों के लिए कारोबार करना आसान हुआ है। ड्रोन और पुर्ज़े बनाने के उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के अलावा, आत्मनिर्भर भारत बनने की दिशा में सरकार के ज़ोरदार समर्थन से अनेक स्वदेशी विनिर्माता इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में आने को प्रोत्साहित हुए हैं। इन उपायों से पिछले एक साल में ही देश में ड्रोन स्टार्टअप की संख्या में 35 फीसदी की वृद्धि हुई है। हालाँकि विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी विनिर्माण अनुकूल तंत्र की स्थापना में अभी काफी काम किया जाना बाकी है, पर फिर भी सरकारी नीतियों की मदद से यह उद्योग सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

अगस्त, 2022 में ड्रोन बाज़ार पर जारी ई-वाई और फ़िक्की की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत रक्षा, वाणिज्यिक और मातृभूमि सुरक्षा क्षेत्रों में स्वदेशी केन्द्रित ड्रोन परियोजनाएँ लागू करके 2030 तक लगभग 1 लाख 8 करोड़ रुपये की घरेलू विनिर्माण क्षमता हासिल कर सकता है।

भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना पहले से ही खुफ़िया जानकारी, निगरानी और टोह (आईएसआर) लेने जैसे कार्यों में ड्रोन प्रौद्योगिकी का बड़े पैमाने पर उपयोग करती हैं। आर्मेनिया-अज़रबाइजान3 और यूक्रेन-रूस में हाल के संघर्षों के दौरान युद्ध के मैदान में, रसद ड्रोन से लेकर झुंड ड्रोन और 'कामिकाज़े' आत्मघाती ड्रोन तक तैनात करने के अनूठे तरीके देखे गए हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत भी अब अपने रक्षा बलों को इस प्रौद्योगिकी से अपग्रेड कर रहा है और हमने पिछले कुछ वर्षों में थल, जल और वायु क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता मज़बूत करने के लिए विभिन्न प्रकार के ड्रोन ख़रीदे हैं।

देश में ड्रोन की सबसे बड़ी तैनाती की पहल, 'स्वामित्व' योजना के एक हिस्से के रूप में हुई, जिसके तहत ज़मीन-जायदाद के सटीक डिजिटल रिकॉर्ड बनाने के लिए पूरे भारत में 6 लाख 60 हज़ार गाँवों के भू-खण्डों की मैपिंग में ड्रोन का उपयोग किया जा रहा है। आज 2 लाख से अधिक गाँवों का ड्रोन की मदद से सर्वेक्षण किया जा चुका है, जो विश्व स्तर पर ग्रामीण विकास में इस तकनीक का अभूतपूर्व उपयोग है।

कृषि क्षेत्र में भी ड्रोन का इस्तेमाल गति पकड़ रहा है। किसान, खेतों में कीटनाशकों और पोषक तत्त्वों के कारगर छिड़काव के लिए ड्रोन का उपयोग कर रहे हैं, जिससे इस काम में समय कम लगता है, दक्षता बेहतर होती है और सुरक्षा बढ़ती है। उन्नत सैंसर वाले ड्रोनों का उपयोग फसलों के स्वास्थ्य विश्लेषण, भूमि उपयोग नियोजन, बीमा दावों का पारदर्शी और त्वरित निपटान जैसे कई अन्य कार्यों के लिए भी किया जा रहा है।

ड्रोन के अभिनव उपयोगों में एक स्वास्थ्य सेवा सम्बन्धी अति महत्त्वपूर्ण दवाओं, टीकों और रक्त के नमूनों को तुरन्त एक स्थान से दूसरी जगह पहुँचाने के लिए इस्तेमाल किया जाना है। पर्वतीय इलाकों में ड्रोन की मदद से इन वस्तुओं को सड़क परिवहन की तुलना में 5 से 6 गुणा कम समय में पहुँचाया जा सकता है, जिससे मानव जीवन बचाने में मदद मिलेगी। इस तकनीक को गति देने और संचालित करने के उद्देश्य से मेघालय, उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश में परीक्षण के तौर पर इनका उपयोग किया जा चुका है।

ड्रोन उद्योग क्षेत्र का उदय होने से इसमें निकट भविष्य में 10,000 से अधिक प्रत्यक्ष नौकरियाँ उत्पन्न होने की उम्मीद है, जिनमें ड्रोन पायलट, डाटा विश्लेषक, हार्डवेयर और सॉफ़्टवेयर डेवलेपर तथा विनिर्माण, सेवा और मरम्मत व तकनीशियन शामिल होंगे। स्वदेशी अनुसन्धान एवं विकास और विनिर्माण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए भारतीय ड्रोन उद्योग नई ऊँचाइयों की ओर बढ़ता हुआ 2030 तक एक वैश्विक ड्रोन हब बनने की राह पर अग्रसर है। इतिहास बताएगा कि यह दशक भारत में ड्रोन प्रौद्योगिकी के नवाचार और प्रसार का स्वर्ण युग होगा।

लिडी क्रो-यू नगालैंड के पारम्परिक ज्ञान का संरक्षक

'जनजातियों की भूमि' के रूप में जाना जाने वाला नगालैंड पूर्वोत्तर भारत में एक छोटा, लेकिन लुभावना राज्य है, जिसमें अन्य उप-जनजातियों के साथ 17 प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। राज्य की एक समृद्ध भाषाई परम्परा है, जिसमें प्रत्येक जनजाति की अपनी भाषा है, जो अपने आप में अनन्य है। स्वादिष्ट आदिवासी व्यंजनों, स्थानीय पेय, सुंदर हस्तशिल्प, लोकगीत, आदिवासी नृत्य और संगीत से लेकर त्योहारों तक, नगालैंड अपने आगंतुकों को विभिन्न रोमांच और विस्मयकारी दृश्य प्रदान करता है।

नागा समुदाय की यह शानदार जीवन शैली उनके सस्टेनेबल और पारम्परिक जीवन कौशल के साथ गुँथी हुई है। नगालैंड की संस्कृति और विरासत को बचाने के लिए लिडी क्रो-यू नामक एक स्वैच्छिक और गैर-लाभकारी संगठन का जन्म हुआ। खो जाने के कगार पर नागा संस्कृति के खूबसूरत पहलुओं को पुनर्जीवित करने की प्रेरणा के साथ लिडी क्रो-यू की सभी महिला सदस्य नागाओं की परम्पराओं और कौशल को क्षेत्र की युवा पीढ़ी को सिखाती हैं। कोहिमा में स्थित लिडी क्रो-यू, कई पुरानी प्रथाओं को जीवित रखने के लिए सांस्कृतिक प्रदर्शनों का आयोजन करता रहा है।

लिडी क्रो-यू की अध्यक्ष, निसाकुओनूओ सोलो ने बताया कि कैसे यह संगठन नागाओं की समृद्ध संस्कृति और परम्पराओं को बढ़ावा दे रहा है और आगामी नागा संस्कृति पर विशेष ध्यान दे रहा है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक अवशेषों की प्रदर्शनी के लिए कल्चरल रिसोर्स सेन्टर स्थापित करने के साथ-साथ समाज ने समय-समय पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। लिडी क्रो-यू के सदस्यों ने प्रधानमंत्री को उनकी कहानी को पहचानने, पूरे देश के साथ साझा करने, क्षेत्र की विरासत को सशक्त बनाने और उत्थान करने के लिए धन्यवाद दिया।

> ये लोग लोक-संगीत, लोक-नृत्य से जुड़ी वर्कशॉप्स भी आयोजित करते हैं। युवाओं को इन सब चीज़ों के लिए ट्रेनिंग भी दी जाती है। नगालैंड की पारम्परिक शैली में कपड़े बनाने, सिलाई-बुनाई जैसे काम की भी ट्रेनिंग युवाओं को दी जाती है। इससे इन युवाओं का अपनी संस्कृति से जुड़ाव तो होता ही है, साथ ही उनके लिए रोज़गार के नए-नए अवसर भी पैदा होते हैं।
>
> **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी**
> **('मन की बात' के सम्बोधन में)**

भारतीय संगीत

विश्व पटल पर लहराता भारतीय परचम

“हम भारतीय, हर चीज़ में संगीत तलाश ही लेते हैं। संगीत की हमारी विधाओं ने न केवल हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है, बल्कि दुनियाभर के संगीत पर अपनी अमिट छाप भी छोड़ी है। भारतीय संगीत की ख़्याति विश्व के कोने-कोने में फ़ैल चुकी है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“भारतीय संगीत और वाद्य यन्त्रों के बढ़ते महत्त्व का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री ने एक ऐसे कार्यक्रम में इस विषय पर विस्तार से बात की, जिसका प्रयोग वे महत्त्वपूर्ण मुद्दों और पहलों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में करते हैं। पूरी संगीत बिरादरी की ओर से, मैं श्री नरेन्द्र मोदी को उनके प्रेरक शब्दों और संगीत को हमारे देश की सॉफ़्ट पावर के एक महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में मान्यता देने के लिए धन्यवाद देना चाहूँगा।”

-डॉ. एल. सुब्रमण्यम
वायलिन वादक

मूल रूप से प्राचीन, लेकिन लगातार विकसित हो रहे भारतीय संगीत के प्रारम्भिक स्रोतों में हज़ारों वर्ष पूर्व के वैदिक ग्रन्थों के अनुष्ठान और उपमहाद्वीप के लोक संगीत का कालातीत स्रोत सम्मिलित है। चार वेदों में से *सामवेद* को भारतीय संगीत का उद्गम माना गया है। भारत की विशिष्टता, हर राज्य या क्षेत्र की अनूठी संस्कृति में निहित है। भारत की हर संस्कृति में प्रसव, विवाह, पर्व, त्योहार से लेकर देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना जैसे विभिन्न अवसरों पर गीत-संगीत की भूमिका अवश्य रहती है।

लगभग एक करोड़ अस्सी लाख की संख्या के साथ विश्व के विभिन्न देशों में बसे भारतीयों का भारतीय संस्कृति और संगीत के प्रसार में बड़ा योगदान है। केवल फिल्म संगीत के लिए ही नहीं, भारतीय शास्त्रीय गायन एवं वादन के प्रति भी गहरा लगाव विश्व में हर जगह दिखाई देता है। दुनिया भर में बड़ी संख्या में लोग जिस प्रकार भारतीय संगीत अपना रहे हैं, उसे देखते हुए इसे भारत की सॉफ़्ट पॉवर का एक महत्त्वपूर्ण पहलू माना जा सकता है।

अपने हाल के ‘मन की बात’ सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने 2013-14 के बाद से भारतीय वाद्ययंत्रों के निर्यात में साढ़े

तीन गुना वृद्धि पर प्रकाश डाला। भारत के संगीत वाद्ययन्त्रों का निर्यात 2013-14 में 49 करोड़ रुपये से बढ़कर 2022 में 172 करोड़ रुपये हो गया है। संगीत वाद्ययन्त्रों का निर्यात भारत से 170 से अधिक देशों में किया जा रहा है, जिनमें प्रमुख निर्यात अमरीका, जापान और जर्मनी में किया जाता है।

यकीनन, जो संगीत हृदय को भाता है, उसमें तन-मन स्वस्थ करने की क्षमता होती है, लेकिन भारतीय संगीत अपने आप में अनूठा है। द बीटल्स जैसे प्रमुख पश्चिमी कलाकारों ने अपने कला प्रदर्शन में भारतीय संगीत के तत्त्व शामिल किए। 60 के दशक के उत्तरार्ध में उन्होंने भारतीय परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पश्चिमी गीतों को भारतीय शास्त्रीय संगीत के बेजोड़ मिश्रण के साथ पेश किया। महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आयोजित समारोह में महात्मा गाँधी के प्रिय भजन ‘वैष्णव जन तो...’ की प्रस्तुति देने वाले ग्रीस के कलाकार कॉन्स्टेंटिनोस कलेत्ज़िस के पास 150 शास्त्रीय, लोक और आदिवासी संगीत वाद्ययन्त्रों का संग्रह है।

हालाँकि भारतीय पॉप और सिनेमा संगीत जैसे अधिक उत्साही संगीत रूप अब दुनिया भर में लोकप्रिय हैं, हिन्दुस्तानी, कर्नाटक, वाद्य संगीत (विशेष रूप से बाँसुरी, तबला और सरोद के उपयोग के साथ) और ग़ज़ल गायन जैसी भारतीय संगीत परम्पराओं को दुनिया भर में बड़ी संख्या में पसन्द किया जाता है। 1838 और 1917 के बीच पूर्वी उत्तर

प्रदेश और पश्चिमी बिहार से गिरमिटिया भारतीयों के साथ भारतीय गीत-संगीत गयाना पहुँचा। अधिकांश भजन और भक्ति गीत भोजपुरी हिन्दी में ही गाए जाते थे, जिनमें हारमोनियम, सितार, तबला, ढोलक और धनताल जैसे पारम्परिक भारतीय वाद्ययन्त्रों का उपयोग होता था। इसी प्रकार इंडो-फीजी संगीत भारत के उत्तरी ग्रामीण अंचल और कुछ दक्षिणी राज्यों के संगीत से बहुत प्रभावित है।

भारतीय संगीत उद्योग और सरकार ने उच्चतम स्तर पर संगीत की सॉफ़्ट पावर को मान्यता दी है और उसका समर्थन किया है और यह भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाने और दुर्लभ वाद्ययन्त्र बनाने तथा बजाने के कौशल को संरक्षित करने की आवश्यकता की पहचान के साथ शुरू होता है। इसकी एक मिसाल है संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित 'ज्योतिर्गमय', जो देश भर के दुर्लभ वाद्ययन्त्रों के वादकों की प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक अनूठा उत्सव है, जिसमें गली-कूचों में कला दिखाने-सुनाने वाले कलाकार (स्ट्रीट परफ़ॉर्मर), प्रशिक्षित कलाकार (ट्रेन्ड ऐंटरटेनर), मन्दिरों से जुड़े कलाकार आदि शामिल होते हैं।

> "मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के सम्बोधन में भारतीय संगीत का उल्लेख किया कि कैसे यह भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीय संगीत वाद्ययन्त्रों के निर्यात में वृद्धि भारतीय संगीत में रुचि का एक सबूत है।"
>
> **-शंकर महादेवन**
> भारतीय गायक और संगीतकार

आज हम विश्व मंच पर अपनी विरासत के साथ-साथ इसके समकालीन मूल्यों को प्रस्तुत कर रहे हैं। पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ़्रीका से लेकर मध्य एशिया तक दुनिया के अनेक बड़े हिस्सों में भारतीय संगीत का आनन्द लिया जाता है। यूनाइटेड किंगडम में आयोजित 'भारतीय राग महोत्सव' और 'दरबार महोत्सव', अमरीका में 1978 से आयोजित होने वाला 'क्लीवलैंड त्यागराज महोत्सव' और ऑस्ट्रेलिया का 'कॉन्फ्लुएन्स : फ़ेस्टिवल ऑफ़ इंडिया' जैसे कार्यक्रम भारतीय संगीत के दुनिया के हर कोने में पहुँचने के कुछ उदाहरण हैं। भारत ने लोक-कूटनीति में अपने अपरिहार्य संसाधन बढ़ाने के लिए संगीत की सॉफ़्ट पावर को एक पारम्परिक और अभिनव चैनल के रूप में अपनाया है।

इसमें संदेह नहीं कि भारतीय संगीत ने पूरी दुनिया पर ज़बरदस्त असर डाला है। यह विश्व संगीत की विभिन्न विधाओं का हिस्सा बना है और अन्य देशों के संगीत में जगह बना रहा है।

जैसे-जैसे सोशल मीडिया विश्व के कोने-कोने तक पहुँच रहा है, वैसे-वैसे भारतीय संगीत का प्रभाव और शक्ति भी बढ़ती जा रही है। दुनिया भर में सोशल मीडिया के इन्फ़्लुएन्सर्स को शास्त्रीय गायन और पारम्परिक वाद्ययन्त्रों को बजाते और अभ्यास करते ही नहीं, उनसे जुड़े मूल्यों को अपनाते भी देखा जा सकता है। बड़े पैमाने पर भारतीय संगीत के वैश्विकरण में हमारे संगीतकारों के अथक प्रयास शामिल हैं और भारत सरकार के प्रोत्साहन से हमारी अपनी संगीत संस्कृति समृद्ध हुई है। सरकार ने भी पहचाना कि संगीत की सॉफ़्ट पावर से वैश्विक विचार को ठोस रूप दिया जा सकता है और हम भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दर्शन के अनुरूप दुनिया भर में अहिंसा, शान्ति और सद्भाव जैसे आदर्शों का प्रसार अपने संगीत के माध्यम से कर सकते हैं।

कॉन्स्टेंटिनोस कलित्ज़िस : ग्रीस से सप्रेम भारत के लिए

भारत अपनी विविध संस्कृति, परम्परा, भोजन, पहनावे के लिए जाना जाता है। संगीत के क्षेत्र में भारत की विशिष्ट पहचान है। आज दुनिया भर के विभिन्न कलाकार भारतीय संगीत के रागों और सरगमों से प्रेरित हैं और **कॉन्स्टेंटिनोस कलित्ज़िस** ग्रीस के एक ऐसे कलाकार हैं, जिन्होंने वर्षों से भारत और भारतीय संगीत के प्रति अपने स्नेह को दर्शाया है।

पिछले तीस वर्षों में कलित्ज़िस ने 44 बार भारत का दौरा किया है। उनकी आध्यात्मिक और संगीत की खोजों ने उन्हें भारत के सभी 29 राज्यों के साथ-साथ द्वीप और हिमालयी क्षेत्र का दौरा करने के लिए प्रेरित किया। उनका उद्देश्य भारत के शास्त्रीय संगीत, नृत्य परम्पराओं और भारतीय संगीत की कई महान हस्तियों के योगदान का अध्ययन करना था।

अपनी खोज के दौरान उन्होंने कई महान भारतीय संगीत प्रशिक्षकों तथा भारतीय संगीत के स्वर और वाद्य कलाकारों से मुलाकात की। खुद एक संगीतकार के रूप में वे तालवाद्य तबला बजाते हैं और उत्तर भारत के भजन, ग़ज़ल और कव्वाली और दक्षिण भारत की विभिन्न शैलियों में गाते हैं। केवल संगीत और नृत्य ही नहीं, कलित्ज़िस ने ग्रीक और भारतीय दर्शन के विषयों के साथ दक्षिण भारत में दो नाटकों में भी प्रमुख भूमिकाएँ निभाई हैं। वे दो बार पोर्ट ब्लेयर के 'द्वीप पर्यटन महोत्सव' का भी हिस्सा रहे हैं, जहाँ उन्होंने बंगाली, उर्दू और हिंदी में गायन किया। 2019 में उन्हें एथेंस में भारतीय दूतावास द्वारा प्रयागराज में कुंभ मेले (182 देशों) की वैश्विक भागीदारी में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था।

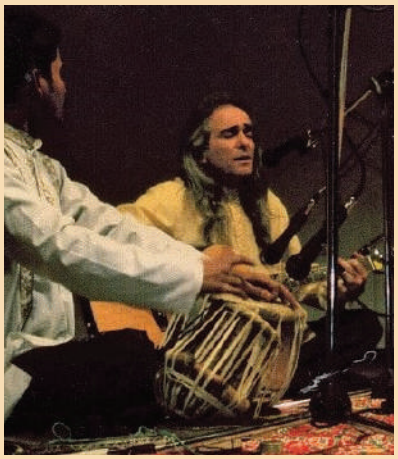

कॉन्स्टेंटिनोस कलित्ज़िस का भारत के प्रति आकर्षण 'इंडियन म्यूज़िक' नामक उनकी पुस्तक में देखा जा सकता है, जिसमें उन्होंने 760 तस्वीरों के साथ भारत से सम्बन्धित अपने अनुभव को बुना है। इनमें से ज़्यादातर फोटोज़ उन्होंने क्लिक की हैं। पुस्तक, जो भारतीय संगीत का सारांश है, पाठकों को भारतीय संस्कृति की एक सम्मोहक यात्रा कराती है। यह पुस्तक एथेंस में भारतीय दूतावास और अन्य प्रायोजकों के समर्थन के साथ हेलेनिक-इंडियन सोसाइटी फ़ॉर कल्चर एंड डेवलपमेंट (ELINEPA) द्वारा ग्रीक में प्रकाशित की गई है।

विदेशी नागरिकों का भारत के प्रति ऐसा उत्साह और आकर्षण भारतीयों के लिए न केवल सुखद है, बल्कि गर्व का विषय भी है, क्योंकि दुनिया हमारी संस्कृति और परम्पराओं को पहचानती है और स्वीकार करती है।

भारतीय संगीत : शान्ति और दिव्यता का स्रोत

"भारतीय संगीत की खूबी यह है कि हमने कभी कोई विधा अछूती नहीं छोड़ी। भारतीय संगीत हर छोटी-से-छोटी विधा को महत्त्व देता है। हमारे पूर्वजों ने इन विधाओं को अलग-अलग रागों में, अलग-अलग शैलियों में बजाया है। इस सुन्दरता को कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने की ज़रूरत है। भारत में संगीत हमेशा से हमारी जीवनशैली का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण तत्व रहा है। भारतीय संगीत न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह अपने साथ एक गहरी शान्ति और दिव्यता भी लाता है। एक व्यक्ति जो संगीत सीखता है, वह आत्मलीन हो जाता है और शान्तिपूर्ण तरीके से अपना जीवन व्यतीत करता है। इसलिए हर स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय को संगीत का पाठ्यक्रम अनिवार्य विषय बनाना चाहिए।

जब मैंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उनके 'मन की बात' में भारतीय संगीत के बारे में बोलते हुए सुना तो मैं बहुत खुश हुआ। भारतीय संगीत को दुनियाभर में ले जाने की उनकी महत्त्वाकांक्षाओं को देखकर खुशी होती है। वह पहले ही बहुत-सी भारतीय उपलब्धियों और परम्पराओं को वैश्विक मंच पर ले जा चुके हैं। प्रधानमंत्री द्वारा भारतीय संगीत की सुन्दरता के इस विस्तृत उल्लेख के साथ, अब मैं उस सफल दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब मेरे देश- भारत के छात्र 100-पीस ऑर्केस्ट्रा के साथ भारतीय संगीत बजाएँगे और भारतीय गीत गाएँगे। मैं उस दिन का इंतजार कर रहा हूँ जब विश्व नेता इस तरह के प्रदर्शन के दर्शक होंगे। 'मन की बात' के इस संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने जो महत्त्वाकांक्षाएँ दिखाई हैं, मुझे विश्वास है कि वह दिन अब दूर नहीं है।"

इलैयाराजा
भारतीय संगीतकार

भारतीय संगीत में कुछ दिव्य है

“प्रधानमंत्री ने अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में भारतीय संगीत की सीमाओं को पार करने और दुनिया भर के लोगों द्वारा पसंद किए जाने के बारे में बात की और वाकई में भारत के बाहर मेरे सभी प्रदर्शनों में, मैंने महसूस किया है कि शास्त्रीय कर्नाटक संगीत हो या ग्लोबल फ़्यूज़न, आध्यात्मिक या सिनेमा संगीत, भारतीय संगीत का दुनिया भर के संगीत प्रेमियों के दिलों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इससे पता चलता है कि इसमें कुछ जादुई और दिव्य है और सिर्फ भारतीय संगीत ही नहीं; जैसा कि प्रधानमंत्री ने अपने सम्बोधन में उल्लेख किया, संगीत वाद्ययन्त्र, जो भारत में उत्पन्न हुए हैं, या भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, वे क्षेत्रीय सीमाओं के परे तेज़ी से लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं।

भारतीय संगीत और वाद्य यंत्रों के बढ़ते महत्त्व का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री ने एक ऐसे कार्यक्रम में इस विषय पर विस्तार से बात की, जिसका प्रयोग वे महत्त्वपूर्ण मुद्दों और पहलों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में करते हैं। पूरी संगीत बिरादरी की ओर से मैं श्री नरेन्द्र मोदी को उनके प्रेरक शब्दों और संगीत को हमारे देश की सॉफ़्ट पावर के एक महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में मान्यता देने के लिए धन्यवाद देना चाहूँगा। भारतीय संगीत ने हमेशा दुनिया भर में एक अनूठी भारतीय पहचान बनाने में महान भूमिका निभाई है और साथ ही दुनिया के नागरिकों के समक्ष हमारी संस्कृति और परम्परा को फैलाया है।”

डॉ. एल. सुब्रमण्यम
वायलिन वादक

भारतीय संगीत : भारतीय सांस्कृतिक विरासत की गौरवशाली परम्परा

“मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि हमारे प्रधानमंत्री ने ‘मन की बात’ के सम्बोधन में भारतीय संगीत का उल्लेख किया कि कैसे यह भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। हमारे संगीत में बहुत गहराई है और लोग कई वर्षों से इसका अध्ययन कर रहे हैं। भारतीय संगीत न केवल हमारे देश में, बल्कि विदेशों में भी अत्यधिक लोकप्रिय है। भारतीय वाद्ययन्त्रों के निर्यात में दिन-ब-दिन वृद्धि हो रही है, इसमें गहरा कलात्मक बोध है। मैं विश्व प्रसिद्ध गिटारवादक जॉन मैकलॉफ़लिन, तबलावादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन और कई अन्य विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के साथ सहयोग करने का भी प्रयास करता हूँ ताकि विश्व संगीत के फ्यूज़न के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को विश्व स्तर पर बढ़ावा दिया जा सके। शंकर महादेवन एकेडमी इसी प्रयास का एक बड़ा हिस्सा है, जिसमें हम हर उम्र के लोगों को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देते हैं। इस अकादमी के माध्यम से हम 88 देशों में शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा दे रहे हैं, क्योंकि हमारे छात्र कई देशों से भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखने आते हैं। लोग भारतीय संगीत को पसंद करते हैं और हमेशा इसके बारे में और अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।”

शंकर महादेवन
प्रतिष्ठित भारतीय गायक
और संगीतकार

सामुदायिक पुस्तकालयों

का शिक्षा का अलख जगाने में योगदान

झारखण्ड में लोगों के लिए खोली गई लाइब्रेरी के बारे में जानने के लिए QR स्कैन करें

भारत तक्षशिला और नालंदा जैसे कुछ सबसे प्राचीन ज्ञान केंद्रों की मातृभूमि रहा है। युगों से विद्या दान (ज्ञान दान) को समाज के लिए सबसे महान कार्यों में से एक माना जाता है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' में बांसा गाँव के श्री जतिन ललित सिंह और झारखण्ड के श्री संजय कश्यप के बारे में उल्लेख किया, जो अपने सामुदायिक पुस्तकालयों के माध्यम से बच्चों को नई उड़ान दे रहे हैं। दूरदर्शन की टीम ने उनके प्रोजेक्ट्स के बारे में और जानने के लिए उनसे बात की :

"मेरा मानना है कि आज के पाठक कल के विचारक हैं। इसी सोच के साथ कोविड-19 के दौरान हमने आस-पास के इलाकों से पुरानी किताबें इकट्ठी करना शुरू किया और हरदोई के बांसा गाँव में कम्युनिटी लाइब्रेरी एंड रिसोर्स सेंटर की शुरुआत की। इसका उद्देश्य प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के लिए उच्च स्तर की किताबें कम कीमत में उपलब्ध कराना और कम उम्र में पढ़ने की आदत डालना था। चूँकि महामारी के कारण कोचिंग सेन्टर बंद थे, इसलिए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के उम्मीदवार अपनी तैयारी के लिए केन्द्र पर आने लगे। हमारे केन्द्र में पढ़ने वाले कुछ बच्चों ने टीईटी और सीटीईटी जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं को पास करके हमें गौरवान्वित किया है। केवल 40 किताबों से शुरू हुए इस पुस्तकालय में अब 3000 से अधिक पुस्तकें हैं। यह सेन्टर आस-पास के 10-15 जिलों में अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है।"

बाँसा गाँव की कम्युनिटी लाइब्रेरी के बारे में जानने के लिए QR स्कैन करें

~श्री जतिन ललित सिंह
संस्थापक, कम्युनिटी लाइब्रेरी एंड रिसोर्स सेन्टर
बांसा गाँव, हरदोई

"हमने पूरे झारखण्ड में कई पुस्तकालय स्थापित किए हैं। हमारे डिजिटल रूप से सक्षम पुस्तकालयों के माध्यम से छात्र ऑनलाइन पाठ्यक्रम ले सकते हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं। इनमें से अधिकांश पुस्तकालय सामुदायिक केन्द्रों, पुराने स्कूल भवनों या लोगों द्वारा दान की गई निजी सम्पति पर स्थापित किए गए हैं। हम छात्रों को नौकरी परामर्श भी प्रदान करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप 100 से अधिक छात्रों को सरकारी नौकरी मिली है। दूरस्थ स्थानों के लिए हमने छह साल पुराने वाहन को मोबाइल लाइब्रेरी में बदला है, जो स्थानीय लोगों के बीच पढ़ने और सीखने को बढ़ावा देने के लिए कोल्हान के ग्रामीण क्षेत्रों में जाता है।

शिक्षा से ही समाज और देश का विकास हो सकता है। मैं सक्षम लोगों से एक साथ आने और शिक्षा का प्रसार करने का आग्रह करता हूँ।"

~श्री संजय कश्यप
झारखण्ड के लाइब्रेरी मैन

मानव मन्दिर

मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के खिलाफ आशा की नई किरण

“मानव मन्दिर अपने नाम के अनुरूप ही मानव सेवा की अद्भुत मिसाल है। हर तरह की हाईटेक सुविधाओं के ज़रिए इस केंद्र में रोगियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का भी प्रयास होता है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी एक लाइलाज, निरन्तर बढ़ने वाला न्युरोमस्कुलर जैनेटिक डिसऑर्डर है, जिसमें शरीर की मांसपेशियाँ शक्तिहीन होती जाती हैं और मरीज़ अन्ततः चलने-फिरने से पूरी तरह लाचार हो जाता है। इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी (आईएएमडी) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अत्यन्त आभारी है कि उन्होंने अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी का उल्लेख करके देश में इसके प्रति चिरप्रतीक्षित जागरूकता पैदा की।”

-संजना गोयल
अध्यक्ष, इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी

स्वामी विवेकानंद का एक प्रसिद्ध कथन है, “मानव जाति की सेवा करना सौभाग्य की बात है, क्योंकि यह ईश्वर की पूजा है।” शान्ति और सद्भाव लाने के इरादे से मानवता की भावना से राष्ट्र और उसके लोगों के लिए की गई सेवा, भगवान की सेवा बन जाती है। यह वंचितों और निराश लोगों में आशा और ऊर्जा का संचार करती है।

आज समाज में मानवता की सेवा कई रूपों में की जा रही है। व्यक्तियों से लेकर स्वैच्छिक समूहों, छोटे दानकर्ता संगठनों से लेकर बड़े कॉर्पोरेट घरानों, निजी संस्थाओं से लेकर गैर-सरकारी संगठनों तक मानवता के लिए किए जाने वाले कार्यों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जिसमें शिक्षा, भोजन, स्वास्थ्य उपाय, आवास, दिव्यांगों के लिए सहायता और सामाजिक रूप से बहिष्कृत, मानसिक रूप से नि:शक्त और समाज के सभी वर्गों के पीड़ित व्यक्तियों के लिए पुनःस्थापन कार्यक्रम शामिल हैं।

इस प्रकार मानवता किसी भी राष्ट्र के लिए सफलता का पैमाना है। हर क्षेत्र में तकनीकी प्रगति, उन्नत अनुसन्धान, नवाचार और अत्याधुनिक बुनियादी ढाँचे तथा उपकरणों के साथ राष्ट्र को

एक ऐसे समाज के निर्माण के लिए, जो विशेष रूप से चुनौतियों के समय बढ़ता, पनपता और फलता-फूलता है, सेवा की महान भावना की आवश्यकता है।

इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसका उल्लेख प्रधानमंत्री ने अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में किया था– वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद चुनौती बनी मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी नामक अनुवांशिक बीमारी से जूझ रहे रोगियों के उपचार में सेवा भाव से जुटा ‘मानव मन्दिर’।

मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी एक अनुवांशिक रोग है, जो किसी भी उम्र में हो सकता है। इसमें शरीर की मांसपेशियाँ धीरे-धीरे कमज़ोर होने लगती हैं, जिससे व्यक्ति पूरी तरह गतिहीन हो जाता है और रोज़मर्रा की गतिविधियों के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाता है। मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से पीड़ित कुछ लोगों को अंततः व्हीलचेयर का उपयोग करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि वे अपने पैर की मांसपेशियों की ताकत खो देते हैं। इसी तरह, कन्धों, बाजुओं और हाथों की मांसपेशियों में भी कमज़ोरी आ जाती है और रोगी के लिए वस्तुओं को उठाना तथा रखना मुश्किल या असम्भव हो जाता है।

भारत में हर साल 4,000 से अधिक बच्चे मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के साथ जन्म लेते हैं। ऐसे रोगियों के उपचार और देखभाल के लिए सेवा की भावना की आवश्यकता होती है। इस बीमारी से पीड़ित बच्चों और वयस्कों की सहायता करने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए बड़े पैमाने पर उनके परिवार और समुदाय की सहायता और सहयोग की ज़रूरत होती है। बीमारी के साथ आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए रोगी की सहायता के रूप में सामूहिक

"मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी (एमडी) की शुरुआत हाथों और पैरों की मांसपेशियों में होती है, लेकिन आगे बढ़ कर यह हृदय की मांसपेशियों और फेफड़ों के आस-पास की मांसपेशियों सहित हर मांसपेशी को प्रभावित करती है। वर्तमान में हम कम से कम 30-40 प्रकार के एमडी के बारे में जानते हैं। विभिन्न प्रकार की फ़िज़ियोथेरेपी रोगी को उनकी विभिन्न मांसपेशियों की ताकत को बरकरार रखने में मदद कर सकती है।"

-डॉ. गिरिराज रतन चांडक
चिकित्सक-वैज्ञानिक, सेन्टर फ़ॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी

सामुदायिक प्रयास महत्त्वपूर्ण हैं।

हिमाचल प्रदेश के सोलन में एक ऐसा केन्द्र है, जो मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के रोगियों के लिए आशा की किरण के रूप में उभरा है। इसका नाम है 'मानव मन्दिर', जिसे इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी (IAMD) द्वारा संचालित किया जा रहा है। मानव मन्दिर अपने नाम के अनुरूप ही मानव सेवा की अद्भुत मिसाल है। यह मानव जाति की सेवा की भावना को अपने मूल में रखते हुए मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के रोगियों के स्वास्थ्य लाभ के लिए और इस रोग के प्रति जागरूकता पैदा करने का काम कर रहा है।

IAMD 1992 से मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी और अन्य न्यूरोमस्कुलर विकारों से प्रभावित परिवारों के जीवन को बदल रहा है। इस एसोसिएशन ने मानव मन्दिर की स्थापना करके इस बीमारी से पीड़ित व्यक्तियों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने के अपने दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया है। 277.54 वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैली मानव मन्दिर की सात मंज़िला इमारत में 50 से अधिक रोगियों के लिए बेड के साथ-साथ पर्याप्त व्हीलचेयर की सुविधा और फ़िज़ियोथेरेपी, इलेक्ट्रोथेरेपी और हाइड्रोथेरेपी उपचार और चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध हैं। केन्द्र सुंदर पहाड़ियों और घाटियों से घिरा हुआ है और एक अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देता है, जहाँ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के रोगियों की व्यापक देखभाल का प्रबन्धन है।

इस केन्द्र की सबसे उत्साहवर्धक विशेषता यह है कि इस संस्था का प्रबन्धन मुख्य रूप से इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति ही करते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता उर्मिला बाल्दी, IAMD की अध्यक्ष संजना गोयल, विपुल गोयल, और इस एसोसिएशन के अन्य सदस्य इस संगठन की रीढ़ हैं और वे इसे रोगियों के लिए एक चिकित्सीय आश्रय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

हर तरह की हाई-टेक सुविधाओं के ज़रिए मरीज़ों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए केन्द्र लगातार प्रयासरत है। 'पिकनिक विद पर्पस', 'पुनर्वास शिविर', 'बागवानी' और कई अन्य पहलों से यह केन्द्र रोगियों को रोचक अनुभवों और गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे एक मज़बूत समुदाय का निर्माण होता है, जिसमें एक-दूसरे की सहायता और उपचार दोनों एक साथ सम्भव हैं।

जैसाकि प्रधानमंत्री ने कहा, मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से जुड़ी एक प्रमुख चुनौती इसके बारे में जागरूकता की कमी है। इसे ध्यान में रखते हुए केन्द्र इस बीमारी के बारे में अधिक-से-अधिक जागरूकता पैदा करने के लिए देश भर में शिविर आयोजित करता है। हर साल 7 सितम्बर को विश्व मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी दिवस के रूप में मनाया जाता है ताकि अनुवांशिक रूप से मिली इस बीमारी के बारे में विश्व-स्तर पर जागरूकता फैलाई जा सके और इसका मुकाबला करने वाले योद्धाओं के साथ हम सब एकजुटता से खड़े हो सकें।

व्यापक शोध, निरन्तर प्रयासों और सेवा की सच्ची भावना के साथ मानव मन्दिर जैसे केन्द्र, संगठन, व्यक्ति और राष्ट्र एक आत्मनिर्भर और सशक्त भारत में इस रोग के लिए एक उचित देखभाल और उपचार खोजने का प्रयास कर रहे हैं।

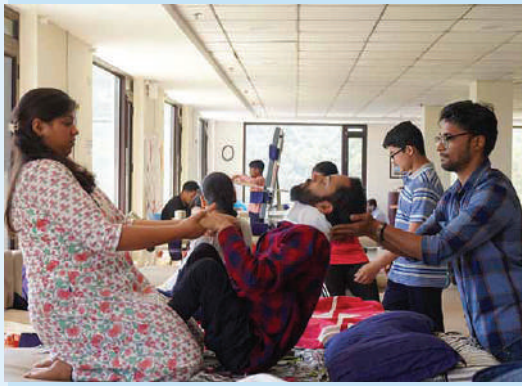

मानव मन्दिर

मानव सेवा के माध्यम से आशा

इंडियन एसोसिएशन ऑफ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी (आईएएमडी) ने सोलन, हिमाचल प्रदेश में 50 बिस्तरों की क्षमता वाला इंटीग्रेटेड मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी रिहैबिलिटेशन सेन्टर (आईएमडीआरसी) - मानव मन्दिर स्थापित किया है, जो मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के रोगियों और उनके परिवारों के लिए पुनर्वास और प्रबन्धन प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करता है। जनवरी, 2017 में स्थापित, IMDRC मानव मन्दिर एक सात मन्जिला इमारत है, जो 277.54 वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैली हुई है।

विज़न:

मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करना

भारत और विदेशों में मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से प्रभावित प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचना ताकि वह एक पूर्ण जीवन जी सके

मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से पीड़ित लोगों के लिए विश्वस्तरीय पुनर्वास सेवाएँ प्रदान करना

मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी का इलाज खोजने हेतु व्यापक शोध करना

IAM:D
...because life is special!

मिशन:

एक ऐसी दुनिया बनाएँ, जो मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से पीड़ित लोगों के लिए बेहतर जीवन प्रदान करे और इसका इलाज खोजने का प्रयास करे

प्रभाव:

अगस्त, 2018 से (~2 वर्ष COVID)

250+	300+	165
चिकित्सकों का प्रशिक्षण	स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण	ऑनलाइन मीटिंग्स (COVID चरम के दौरान)
1456	148	495
रोगी IMDRC में आए	मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के अलावा रोगी	डीएनए टेस्ट

फ़िज़ियोथेरेपी विभिन्न मांसपेशियों की ताकत को बरकरार रखती है

"मैं डॉ. गिरिराज रतन चांडक, एक चिकित्सक-वैज्ञानिक के रूप में सेन्टर फ़ॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी में कार्यरत हूँ। मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी (एमडी) एक दुर्भाग्यपूर्ण वंशानुगत बीमारी है, जिसमें आपके शरीर की मांसपेशियाँ काम करना बन्द कर देती हैं और समय के साथ मांसपेशियों का उपयोग न करने के कारण वे ढीली हो जाती हैं और उनकी वॉल्युम और ताकत कम हो जाती है। एमडी की शुरुआत हाथों और पैरों की मांसपेशियों में होती है, लेकिन आगे बढ़ कर यह हृदय की मांसपेशियों और फेफड़ों के आस-पास की मांसपेशियों सहित हर मांसपेशी को प्रभावित करती है। इसी वजह से मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी एक घातक बीमारी मानी जाती है। एमडी का एक और पहलू यह है कि यह किसी भी उम्र और लिंग के व्यक्ति को प्रभावित कर सकती है, इसका कारण यह है कि एमडी विभिन्न प्रकार की होती हैं, इसलिए यह विश्लेषण करना महत्त्वपूर्ण है कि रोगी किस प्रकार की एमडी से पीड़ित है। वर्तमान में हम कम-से-कम 30-40 प्रकार की एमडी के बारे में जानते हैं।

एमडी के बारे में एक और भी दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि इसका कोई इलाज उपलब्ध नहीं है। इसलिए एमडी के लिए प्रमुख उपचार अप्रभावित मांसपेशियों को सक्रिय रखना और उनकी ताकत को स्थिर रखना है। कई डॉक्टर मरीज़ को स्टेरॉयड देते हैं, लेकिन मेरे हिसाब से फ़िज़ियोथेरेपी उपचार में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विभिन्न प्रकार की फ़िज़ियोथेरेपी रोगी को उनकी विभिन्न

मांसपेशियों की ताकत को बरकरार रखने में और उन्हें आसानी से अपना नियमित जीवन जीने में मदद कर सकती है।

इस बीमारी की रोकथाम ही इसका एकमात्र इलाज है। सबसे पहले और सबसे महत्त्वपूर्ण, रोगियों को एक अच्छे न्यूरोलॉजिस्ट से सलाह लेनी चाहिए और फिर रोगी को किस तरह की बीमारी है, यह समझने के लिए अनुवांशिक परीक्षण के लिए जाना चाहिए। यदि किसी महिला को यह बिमारी है और वह गर्भवती होने की योजना बना रही है, तो डॉक्टर उसका मार्गदर्शन कर सकते हैं, साथ ही गर्भावस्था के दौरान गर्भ से एमनियोटिक फ़्लुइड लिया जा सकता है ताकि यह पता चल सके कि रोग शिशु को प्रभावित करेगा या नहीं।

साथ ही, इसका इलाज खोजने के लिए भारत और दूसरे देश इस क्षेत्र में काफ़ी शोध कर रहे हैं। हमें उम्मीद है कि जीन-एडिटिंग, मसल-स्पेसिफिक थेरेपी जैसी तकनीकों की मदद से रोगियों को निकट भविष्य में ठीक होने में मदद मिलेगी।"

मानव मन्दिर के संरक्षकों का कहना है...

उर्मिला बाल्दी
(समाज सेवी, सोलन, हिमाचल प्रदेश)

"मैं इंडियन एसोसिएशन फ़ॉर मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के साथ 30 से अधिक वर्षों से काम कर रही हूँ और यह मेरे लिए जीवन बदलने वाला अवसर रहा है। हमारे देश में मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी जैसी बीमारी के बारे में जागरूकता बहुत कम है और इसका कोई इलाज नहीं है। हालाँकि पर्याप्त चिकित्सा, देखभाल और प्रबन्धन के साथ जिस गति से यह किसी व्यक्ति को प्रभावित करता है, उसे धीमा किया जा सकता है, जिससे मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के रोगी को एक सहज जीवन जीने में मदद मिलती है। इसे ध्यान में रखते हुए आईएएमडी की पहल इंटीग्रेटेड मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी रिहैब सेन्टर के रूप में अपने रोगियों के लिए आशा की किरण बनकर उभरी है, जिसे सही मायने में मानव मन्दिर के रूप में जाना जाता है। भारत भर से आने वाले मस्कुलर डिस्ट्रॉफी रोगियों को फिजियोथिरैपी, हाइड्रोथेरेपी, काउंसलिंग, योग और प्राणायाम जैसे विभिन्न उपचार मिलते हैं और मनोरंजक गतिविधियाँ, सभी एक ही छत के नीचे उपलब्ध हैं। प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में मस्कुलर डिस्ट्रॉफी का जिक्र करने से हमें उम्मीद की एक नई किरण मिली है कि अब उनके समर्थन और कार्रवाई के आह्वान से, शोधकर्ता और वैज्ञानिक जल्द ही इस बीमारी का इलाज ढूँढ लेंगे।"

विपुल गोयल
(सचिव, मानव मन्दिर)

"1992 में अपनी स्थापना के बाद से संस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू पिकनिक और आउटिंग के आयोजन के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को करना था। पिकनिक प्रोजेक्ट को 'पिकनिक विद अ पर्पज' के नाम से जाना जाता है। 7 दिवसीय शिविर में हम योग, प्राणायाम, फिजियोथेरेपी और हाइड्रोथेरेपी कराते हैं। शाम को कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के स्वयंसेवकों का दौरा होता है। उनकी उपस्थिति मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से पीड़ित बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता के जीवन में भी एक बड़ा अन्तर लाती है। स्वयंसेवकों द्वारा डिजाइन किए गए खेलों, जैसे अन्ताक्षरी और विभिन्न अन्य खेलों के साथ-साथ परामर्श ने रोगियों के जीवन पर एक बड़ा सकारात्मक प्रभाव डाला है। बोकिआ एक ऐसा गेम है, जो पैरालिम्पिक्स का भी हिस्सा है। इसका अन्तरराष्ट्रीय कोड केवल मानव मन्दिर में उपलब्ध है। इसके ज़रिए सिर्फ मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के मरीज ही नहीं, बल्कि व्हीलचेयर पर बैठे अन्य बच्चे भी अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर खेल खेलने गए हैं। जहाँ चाह, वहाँ राह, हमने देखा है...

वीरेंद्र कालरा
(स्वयंसेवक, मानव मन्दिर)

"मैं दिल्ली से वीरेंद्र कालरा हूँ। मैं 2 साल की उम्र से मस्कुलर डिस्ट्रॉफी का मरीज़ हूँ। आज बैंकर के रूप में लगभग 35 वर्ष हो गए हैं और आज मैं एक वरिष्ठ प्रबन्धक के रूप में सफलतापूर्वक कार्य कर रहा हूँ। मैं IAMD से करीब 30-32 साल से जुड़ा हूँ। मुझे याद है कि हम 2 दिवसीय शिविर आयोजित करते थे, जहाँ विशेषज्ञ डॉक्टर अभिभावकों को एमडी का प्रबन्धन करने के बारे में मार्गदर्शन करते थे। मुझे याद है कि कैसे विपुल जी संस्थान का एक प्रोटोटाइप लगाते थे, जहाँ मरीज़ आएँगे और रहेंगे और विकार और उसके प्रबन्धन के बारे में और जानेंगे। आज यह मानव मन्दिर के रूप में एक हकीकत है। हम कह सकते हैं कि आशा के पंख असीमित हैं। हालाँकि हम अपनी स्थिति के कारण अधिक यात्रा नहीं कर सकते हैं, पर हम अपनी संचालित व्हीलचेयर पर बहुत कुछ कर सकते हैं, प्रौद्योगिकी के लिए धन्यवाद। आपको जानकर हैरानी होगी कि मानव मन्दिर का प्रबन्धन खुद एमडी के मरीज़ कर रहे हैं। पीएम ने अपने हालिया 'मन की बात' में मानव मन्दिर का भी उल्लेख किया और मुझे यकीन है कि यह अधिक से अधिक लोगों को आगे आने और एमडी से पीड़ित लोगों का समर्थन करने के लिए प्रेरित करेगा।"

...जब इन्सान जीने की इच्छा रखता है तो वह कुछ भी हासिल कर सकता है। यही सन्देश हम मानव मन्दिर के माध्यम से विश्व में फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। प्रधानमंत्री का 'मन की बात' में मानव मन्दिर और मस्कुलर डिस्ट्रॉफी का जिक्र हमारे लिए प्रासंगिक है। हमें विश्वास है कि इससे इस स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद मिलेगी और मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से पीड़ित कई लोग मानव मन्दिर आएँगे और हमें सकारात्मक रूप से उनके जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।"

मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी का इलाज तलाशना- आत्मनिर्भर भारत की एक कसौटी

संजना गोयल
अध्यक्ष, इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी

इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी (IAMD) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अत्यन्त आभारी है कि उन्होंने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी का उल्लेख करके देश में इसके प्रति चिरप्रतीक्षित जागरूकता पैदा की। लेकिन अब भी मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से पीड़ित अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचने के लिए बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी (एमडी) एक लाइलाज, निरन्तर बढ़ने वाला न्यूरोमस्कुलर जैनेटिक डिसऑर्डर है, जिसमें शरीर की मांसपेशियाँ शक्तिहीन होती जाती हैं और मरीज़ अन्ततः चलने-फिरने से पूरी तरह लाचार हो जाता है और दैनिक क्रियाओं तक के लिए उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह बीमारी किसी भी उम्र में हो सकती है और कभी-कभी तो एक ही परिवार में दो से अधिक बच्चों को भी हो सकती है। मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी बीमारी से अब भी कई लोग अन्जान हैं, इसलिए देश में इस रोग से पीड़ित लोगों की सही संख्या का अनुमान लगा पाना मुश्किल है। चूँकि इस बीमारी का इलाज नहीं है, इसलिए कई लोग जागरूकता की कमी के कारण उल्टे-सीधे या ग़लत निदान के जाल में फँस जाते हैं। चूँकि यह निरन्तर बढ़ने वाला अनुवांशिक विकार है, इसलिए मरीज़ बहुत ही कष्टमय जीवन जीता है, विशेषकर यदि परिजनों का व्यवहार उसके प्रति संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण न हो। इसलिए मरीज़ को समय पर भावनात्मक और अच्छी देखभाल मिलना बहुत ज़रूरी है ताकि बीमारी का प्रबन्धन करने के तरीके सीखे जा सकें। यह सीखना केवल मरीज़ के लिए ही नहीं अपितु उसके परिवार के लिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस बीमारी के उपचार की कोई दवा नहीं है।

किसी भी मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से पीड़ित रोगी के लिए न्यूनतम आवश्यकता है– एक परिवार और चौबीस घंटे सहानुभूतिपूर्वक देखभाल करने वाला एक सहायक, क्योंकि मरीज़ पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होता है। चूँकि यह बीमारी मांसपेशियों के विकार से सम्बन्धित है, इसलिए फ़िज़ियोथेरेपी

ज़रूरी है और इसके लिए सोशलाइज्ड गाइडेड एक्सरसाइज़ की ज़रूरत पड़ती है। मांसपेशियों पर फ़िज़ियोथेरेपी से अधिक कारगर असर हाइड्रोथेरेपी (जलीय व्यायाम) का होता है। इससे न केवल मांसपेशियों को आराम मिलता है, बल्कि मज़बूती भी आती है। हाइड्रोथेरेपी भी किसी प्रशिक्षित व्यक्ति की निगरानी में होनी चाहिए, क्योंकि मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से पीड़ित व्यक्ति कमज़ोर होता है और उस पर हर समय नज़र रखना बहुत ज़रूरी है। कसरत के अलावा पॉवर्ड व्हीलचेयर भी मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी से पीड़ित मरीज़ का जीवन आसान कर सकती है और वह आंशिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकता है। सबसे पहले तो मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के मरीज़ के परिवार को इस बीमारी से समझौता करके यह समझना और सीखना ज़रूरी है कि उन्हें सकारात्मक रवैये के साथ इस बीमारी का प्रबन्धन कैसे करना है।

इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी 1992 में हिमाचल प्रदेश के सोलन ज़िले में इंटेग्रेटिड मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी रिहैबिलिटेशन सेन्टर (IMDRC) आईएमडीआरसी की स्थापना करने के बाद से इसे चला भी रहा है। 50 बिस्तर वाले इस प्रतिष्ठान में समूचे भारत से मरीज़ और उनके परिवार विशेष फ़िज़ियोथेरेपी, हाइड्रोथेरेपी तथा अनुवांशिक और मनोवैज्ञानिक परामर्श के लिए यहाँ आते हैं। यह प्रतिष्ठान विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के स्वयंसेवियों की मदद से यहाँ कई प्रकार की मनोरंजक गतिविधियाँ, पिकनिक और परिजनों को परामर्श देने का काम करता है ताकि इस बीमारी से पीड़ित और प्रभावित लोगों का जीवन आसान हो सके।

इस बीमारी का प्रबन्धन सबसे महत्त्वपूर्ण है, लेकिन मस्कुलर डिस्ट्रॉफ़ी के मरीज़ों के लिए वरदान, यानी बीमारी का उपचार करने वाली दवाएँ अनुसंधान से ही मिल सकती हैं। अनुसंधान कार्यक्रम को अभियान के रूप में छेड़ कर ही इस जटिल अनबूझ पहेली को सफलतापूर्वक बूझने में मदद मिल सकती है। परिणाम मिलने में समय लग सकता है, लेकिन शुरुआत तो करनी होगी। हम देश के ही नहीं, विदेशों के न्यूरोमस्कुलर अनुवांशिक मरीज़ों को कम खर्च वाली औषधियाँ और थेरेपी उपलब्ध करवाने में अग्रणी हो सकते हैं। न्यूरोमस्कुलर अनुवांशिक विकारों के उपचार की दवाइयाँ तैयार करना भारत को 'आत्मनिर्भर' बनाने की दिशा में सहस्राब्दि की सबसे बड़ी पहल हो सकती है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

IAMD @IAMDManavMandir

Thank you our Honorable PM Shri Narendra Modi Ji for your blessings and supporting the cause Muscular Dystrophy and Manav-Mandir Centre Solan HP.

This is a great honour for all of us.

Regards
IAMD TEAM

> **PMO India** @PMOIndia · Nov 27
> PM @narendramodi mentioned about Muscular Dystrophy in #MannKiBaat and appreciated the efforts of 'Manav Mandir' in Himachal Pradesh in spreading awareness about it.

Himanta Biswa Sarma @himantabiswa

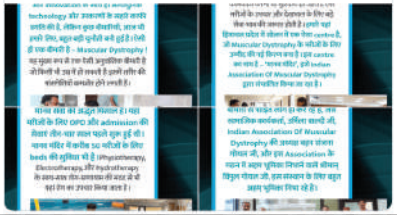

The Presidency of G20 has arrived as a big opportunity for us. We have to make full use of this opportunity and focus on global good - Hon PM Shri @narendramodi Ji

#MannKiBaat

11:25 AM · Nov 27, 2022

Dr Jitendra Singh @DrJitendraSingh

PM Sh @narendramodi speaks about 'Vikram-S', first rocket designed and prepared by the private sector of India. #MannKiBaat #ISRO

11:09 AM · Nov 27, 2022

Amitabh Kant @amitabhk87

Grateful to PM @narendramodi for highlighting the #G20India presidency in today's episode of Mann Ki Baat. It is indeed an honour for every Indian citizen to be a part of this prestigious global event as we showcase India's progress to the rest of the world.

Meenakashi Lekhi @M_Lekhi

Our genres of music have not only enriched our culture, but have also left an indelible mark on the world. The people who moved to Guyana in the 19th and 20th century have also carried many Indian traditions with them.

- PM @narendramodi Ji
#MannKiBaat

Konstantinos Kalaitzis

https://www.youtube.com/watch?v=0XMG-zEJ8g 27-November-2022
Prime Minister of India, Narendra Modi, in his monthly "MannKiBaat" show on All India Radio, praised Greek artist Constantinos Kalaitzi for his work on Indian culture and music, talking about his book "Indian Music, great creators, musical instruments, dances", presenting a video clip for Constantine, to the Indian people
Thank you for the recognition! 🙏

His words in the video, in Greek:... See more

See original · Rate this translation

Subhash Chandra Baheria
November 27 at 8:14 PM

अत्यन्त गर्व का विषय है कि आज #मन_की_बात कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने #भीलवाड़ा के #शाहपुरा कस्बे की बेटी एवं मेरी छोटी बहिन श्रीमती #उर्मिला_बाल्दी की द्वारा #हिमाचल के #सोलन नगर में किए जा रहे अद्वितीय स्वास्थ्य सेवा कार्यों की सराहना की है।
उर्मिला जी एवं उनके सहयोगी सामाजिक कार्यकर्ताओं के सतत् प्रयासों से #मस्क्युलर_डिस्ट्रोफी नामक घातक रोग से पीड़ित रोगियों के उपचार हेतु #मानव_मन्दिर नामक चिकित्सा केन्द्र सोलन में ही सक्रिय है। यह चिकित्सा... See more

Dr Mansukh Mandaviya @mansukhmandviya

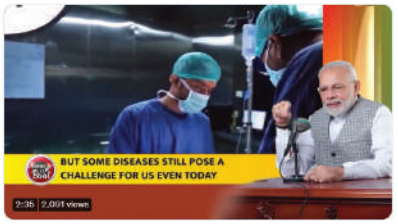

हिमाचल प्रदेश के सोलन में एक ऐसा सेंटर है, जो Muscular dystrophy के मरीज़ों के लिए उम्मीद की नई किरण बना है। जानिए इस 'मानव मंदिर' के बारे में।

#MannKiBaat
Translate Tweet

11:56 AM · Nov 27, 2022

Piyush Goyal @PiyushGoyal

'Made In India' की धुन 🎶

Surge in exports of musical instruments from India found mention in PM @NarendraModi ji's #MannKiBaat today.

Brand India's quality has hit the right notes globally.

11:47 AM · Nov 27, 2022

Dr. Subhas Sarkar @Drsubhassarkar

Meet 'Library Man' of Jharkhand praised by PM Modi in 'Mann Ki Baat'
jagran.com/politics/state...

via NaMo App

Meet 'Library Man' of Jharkhand praised by PM Modi in 'Mann Ki Baat'

JAGRAN NOVEMBER 28, 2022

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp · Nov 27
आज के #MannKiBaat में PM @narendramodi जी द्वारा भारत की G-20 अध्यक्षता को लेकर देश में बढ़ रहे उत्साह, sky is not the limit के मंत्र से आगे बढ़ते युवाओं की उपलब्धियां, स्पेस सेक्टर में बनते नए इतिहास, भारतीय संगीत की लोकप्रियता जैसे विषयों पर चर्चा सभी को आह्लादित करने वाला है।

> **Narendra Modi** @narendramodi · Nov 27
> Began today's #MannKiBaat programme by talking about a very special gift I received from a weaver in Telangana and now it is an example of keen interest towards India's G20 Presidency.

RajyavardhanRathore @Ra_THORe
Official

जो बच्चे कभी हाथ से कागज का हवाई जहाज बनाकर उड़ाया करते थे, उन्हें अब हवाई जहाज बनाने का मौका मिल रहा है। स्पेस को निजी क्षेत्र के लिए खोले जाने के बाद, युवाओं के सपने साकार हो रहे हैं। युवा मानो कह रहे हों- Sky is not the limit: प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat
Translate Tweet

Shivraj Singh Chouhan @ChouhanShivraj

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी की प्रेरणा से देशभर में युवा अपने संकल्पित प्रयासों से शिक्षा और ज्ञान की जो ज्योत प्रज्ज्वलित कर रहे हैं, निश्चय ही इससे भारत के उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को साकार करने में अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त होगा।
#MannKiBaat
Translate Tweet

> **PMO India** @PMOIndia · Nov 27
> Imparting knowledge is the noblest work in the interest of the society. PM @narendramodi highlights praiseworthy efforts being made across the country to further this cause. #MannKiBaat

Yogi Adityanath @myogiadityanath

आज आदरणीय PM श्री @narendramodi जी ने @mannkibaat में शिक्षा की अलख जगा रहे हरदोई निवासी श्री जतिन ललित सिंह जी की चर्चा की है।

अपने Community Library & Resource Centre से विद्यार्थियों को पुस्तकें व प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहे जतिन से असंख्य युवा प्रेरित होंगे।

आभार प्रधानमंत्री जी!
Translate Tweet

Shobha Karandlaje @ShobhaBJP

PM Sri @narendramodi Ji, in his #MannKiBaat, heaps praise on the sustainable lifestyle of the people in Nagaland, their culture, and their music, and lauds the initiative of Lidi-Cro-U to revive Naga heritage.

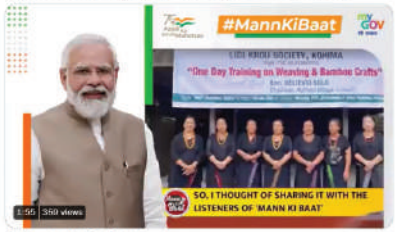

Lidi-Cro-U is helping launch Naga Music albums.

Narendra Modi and 5 others

IndiainDenmark @IndiainDenmark

Under #MannKiBaat nævner premierminister @narendramodi om Konstantinos Kalaitzis, en kunstner fra Grækenland, som sang Bapus favorit 'Vaishnava Jana To'.

> **PMO India** @PMOIndia · Nov 27
> During #MannKiBaat, PM @narendramodi mentions about Konstantinos Kalaitzis, an artist from Greece, who sang Bapu's favourite 'Vaishnava Jana To'. facebook.com/narendramodi/v...

3:14 PM · Nov 27, 2022

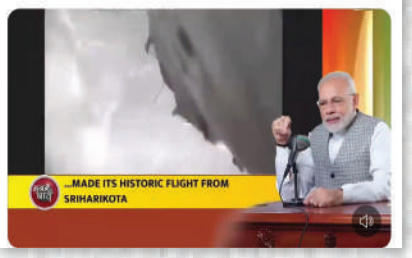

Skyroot Aerospace @SkyrootA

Thrilled to hear our PM Shri @narendramodi ji sharing Skyroot's historic Vikram-S launch through @mannkibaat, which he says proved 'sky is no limit'. Thanking his vision that opened up private space sector & proud that #Prarambh inspires more youth of India. #OpeningSpaceForAll

Jyotiraditya M. Scindia @JM_Scindia

ड्रोन, व्यापार और सेवाओं के विस्तार में अनन्य भूमिका निभाने के साथ-साथ लोगों की समृद्धि का भी कारण बन रहे हैं। ये प्रौद्योगिकी में विकास की ही देन है कि अब ड्रोन हर क्षेत्र में कारगर सिद्ध हो रहे हैं। #MannKiBaat

Translate Tweet

Narendra Modi and 3 others

Raghubar Das @dasraghubar

Sanjay Kashyap ji of Jharkhand is also giving new wings to the dreams of poor children.

Today he has become the 'Library Man' for children in many districts of Jharkhand.

His mission to open library is taking form of a social movement today: Shri @narendramodi ji #MannKiBaat

11:40 AM · Nov 27, 2022

IndiainSlovenia @IndiainSlovenia

10/12 Highlights of the 95th edition of Hon'ble @narendramodi's #MannKiBaat. PM started the talk by mentioning a handcrafted gift presented to him by Hariprasad frm Rajanna Sircilla district of Telangana - a banner of recently launched #G20 logo.

@MinOfCultureGoI @TexMinIndia

জি-২০ সন্মিলন আয়োজিত কৰিবলৈ পোৱাটো আমাৰ বাবে সৌভাগ্য : মন কী বাত'ৰ ৯৫সংখ্যক সংস্কৰণত ক'লে প্ৰধানমন্ত্ৰী মোদীয়ে

আমাৰ বাবে সৌভাগ্য

G20 presidency opportunity to showcase soft power: PM

'Have To Focus On Global Good; India Has Solutions To Challenges'

Times News Network

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi on Sunday said that taking over the presidency of the "powerful" G20 group of nations from next month will give an opportunity to every citizen of India to celebrate and showcase the country's soft power and diverse culture to the world. He also highlighted India's capability to provide solutions to the various challenges being faced by the world, specially those related to peace, unity, environment and sustainable development.

PM Narendra Modi and Indonesian President Joko Widodo during the presidency handover ceremony at the G20 Summit in Bali on Nov 16

In his monthly radio address Mann ki Baat, the PM said the country must utilise the opportunity by focusing on global good. "...the presidency of G20 has arrived as a big opportunity for us. We have to make full use of this opportunity and focus on global good, world welfare. Whether it is peace or unity, sensitivity towards the environment, or sustainable development, India has solutions to challenges related to these. The theme that we have given 'One Earth, One Family, One Future' shows our commitment to 'vasudhaiva kutumbakam'," he said.

Modi elaborated on how the G20 has a partnership comprising two-thirds of the world's population, three-fourths of world trade, and 85% of world GDP. India is going to preside over this group from December 1. "What a great opportunity has come for India, for every Indian! This becomes even more special because India was awarded this responsibility during 'Azadi Ka Amrit Kaal (75th year of India's independence')," the PM said.

India will host several programmes related to G20 in different parts of the country in the coming days. Stating that during this period, people from different parts of the world will visit different states, Modi said, "I am sure that you will bring the diverse and distinctive colours of your culture to the world and you also have to remember that the people coming to the G20, even if they come now as delegates, are tourists of the future."

Modi also hailed the development last week of India sending its first such rocket into space that was designed and prepared by the country's private sector. "The name of this rocket is 'Vikram-S'. As soon as this first rocket of the indigenous space startup made a historic flight from Sriharikota, the heart of every Indian swelled with pride," the PM said.

Modi urged students and youngsters to join events related to India's G20 presidentship "in one way or the other".

PM: India must utilise G20 presidency for global good

'India committed to *Vasudhaiva Kutumbakam*'

Prabhudatta Mishra
New Delhi

As India readies to assume the presidency of the G20 from December 1, Prime Minister Narendra Modi on Sunday said the country would focus on the welfare of the entire world during its term.

Narendra Modi

Emphasising that the G20 presidency is a "big opportunity" for India, Modi assured the country's commitment to *Vasudhaiva Kutumbakam* (the world is one family).

In his monthly address to the nation, *Mann Ki Baat*, over the radio, he said India is going to preside over a big group, the G20 nations represent two-thirds of the world's population, three-fourths of world trade, and 85 per cent of the world's gross domestic product (GDP). The G20 comprises Argentina, Australia, Brazil, Canada, China, France, Germany, India, Indonesia, Italy, Japan, the Republic of Korea, Mexico, Russia, Saudi Arabia, South Africa, Turkey, the UK, the US, and the EU.

"Whether it is peace or unity, sensitivity towards the environment, or sustainable development, India has solutions to challenges related to these," Modi said. The Prime Minister also hailed the unique gift from Hariprasad, a weaver from Telangana, who sent him a G20 logo woven by himself.

He also announced that several programmes related to the G-20 would be organised in different parts of the country in the coming days.

He mentioned the recent launch of the first rocket of the indigenous space start-up that has been designed and prepared in the private sector. On Saturday, India also launched a satellite, jointly developed with Bhutan, he added.

The prime minister also referred to the exemplary works of two individuals, Sanjay Kashyap from Jharkhand and Jatin Lalit Singh from Uttar Pradesh, for their contributions in setting up libraries for the people.

RAY OF HOPE

Wishing recovery to all the people suffering from muscular dystrophy, he said the hospital at Solan in Himachal Pradesh has become a new ray of hope for muscular dystrophy patients.

He played a rendition of *Vaishnav Jana to* by Greece singer Konstantinos Kalaitzis, and said: "Our forms of music have not only enriched our culture but have also left an indelible mark on the world music."

जी-20 हमारे लिए बड़ा मौका, भारत के पास हर चुनौती का हल : मोदी

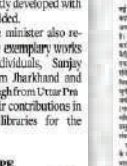

मन की बात : पीएम ने कहा, कागज के हवाई जहाज बनाने वाले युवा आज अंतरिक्ष में भेज रहे रॉकेट

विश्व के लिए कल्याणकारी होगी जी-20 की भारत की अध्यक्षता : मोदी

मन की बात

'जी-२०' अध्यक्षपद विश्वकल्याणाची संधी

एकात्मता, पर्यावरणप्रश्नी मार्ग काढण्याचा मोदींना विश्वास

ବିଶ୍ୱ ମଙ୍ଗଳ ପାଇଁ ଜି୨୦ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତା

ఆంధ్రప్రభ

జీ20 కూటమికి భారత్ అధ్యక్షత

గొప్ప అవకాశం!

ABN ఆంధ్రజ్యోతి

సిరిసిల్ల నేతన్న ప్రతిభ అద్భుతం

पीएम ने 'मन की बात' में कही बिहार के संगीत की बात

बाकी पेज 10 पर

मन की बात | इलेक्ट्रिकल म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट का निर्यात 60 गुना बढ़ा: मोदी

चांद-तारों को देखकर आकृतियां बनाने वाले युवा आज भेज रहे रॉकेट

एजेंसी | नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज रेडियो कार्यक्रम मन की बात के जरिए देशवासियों को संबोधित किया। यह मन की बात का यह 95 वां एपिसोड था।

इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि आप कल्पना कर सकते हैं कि जो बच्चे कभी चांद-तारों को देखकर आसमान में आकृतियां बनाया करते थे, उन्हें अब भारत में ही रॉकेट बनाने का मौका मिल रहा है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर और भोजपुरी सांसद रवि शंकर प्रसाद ने अहमदाबाद में पीएम नरेंद्र मोदी की मन की बात को सुना। वहीं, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने भी मन की बात को सुना। मोदी ने कहा, साथियों, भारत स्पेस के सेक्टर में अपनी सफलता, अपने पड़ोसी देशों से भी साझा कर रहा है।

कल ही भारत ने एक सैटेलाइट लॉन्च की, जिसे भारत और भूटान ने मिलकर डेवलप किया है। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले ही मुझे तेलंगाना से हरिप्रसाद गारू ने हाथ से जी-20 का लोगो बुनकर भेजा है। ये शानदार उपहार देखकर मैं हैरान रह गया। मेरे मन में विचार आया कि तेलंगाना में बैठा व्यक्ति भी जी-20 सम्मेलन से खुदको कितना जुड़ा हुआ महसूस करता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि चाहे शांति हो या एकता, पर्यावरण को लेकर संवेदनशीलता की बात हो, या फिर सतत विकास की, भारत के पास इनसे जुड़ी चुनौतियों का समाधान है।

हमने (जी-20 के लिए) वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर की जो थीम दी है, उससे वसुधैव कुटुम्बकम के लिए हमारी प्रतिबद्धता जाहिर होती है। मोदी ने कहा, ड्रोन के क्षेत्र में भी भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। कुछ दिन पहले हमने देखा कि कैसे हिमाचल प्रदेश के किन्नौर में ड्रोन के जरिए सेब ट्रांसपोर्ट किए गए। मोदी ने कहा, बीते 8 वर्षों में भारत से म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट का निर्यात साढ़े तीन गुना बढ़ गया है। इलेक्ट्रिकल म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट की बात करें तो इनका निर्यात 60 गुना बढ़ा है। इससे पता चलता है कि भारतीय संस्कृति और संगीत की लोकप्रियता दुनिया में बढ़ रही है। मोदी ने कहा कि नागा संस्कृति के जो खूबसूरत आयाम धीरे-धीरे खोने लगे थे उन्हें 'LIDI KROU' संस्था ने पुनर्जीवित करने का काम किया है। उदाहरण के लिए इस संस्था ने नागा संगीत की एल्बम लॉन्च करने का काम शुरू किया है।

भारत के पास सभी चुनौतियों का समाधान : प्रधानमंत्री

मन की बात

55 अलग-अलग जगहों पर संगठन की 200 से ज्यादा बैठकें होंगी देश में

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने "मन की बात" में रविवार को कहा कि भारत को जी-20 की अध्यक्षता मिलना बड़ा अवसर है। देश को इसका पूरा उपयोग करते हुए विश्व कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना है।

'मन की बात' की 95वीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने कहा कि शांति हो या एकता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता हो या टिकाऊ विकास, भारत के पास इन सबसे जुड़ी चुनौतियों के समाधान हैं। भारत आधिकारिक तौर पर एक दिसंबर को जी-20 समूह की अध्यक्षता ग्रहण करेगा और एक वर्ष के लिए जी-20 का अध्यक्ष रहेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि विश्व की आबादी में जी-20 की दो-तिहाई, विश्व व्यापार में तीन-चौथाई और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 85% भागीदारी है। भारत एक दिसंबर से इतने बड़े व सामर्थ्यवान समूह की अध्यक्षता करने जा रहा है।

वसुधैव कुटुम्बकम के प्रति संकल्पित

प्रधानमंत्री ने कहा, हमने वन अर्थ (एक पृथ्वी), वन फैमिली (एक परिवार), वन फ्यूचर (एक भविष्य) का जो नारा दिया है, वह वसुधैव कुटुम्बकम के प्रति हमारे संकल्प को प्रदर्शित करता है। मोदी ने कहा कि जी-20 में आने वाले लोग भले ही एक प्रतिनिधि के रूप में आएं, लेकिन वे भविष्य के पर्यटक भी हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि इतने बड़े आयोजन के दौरान देशवासी भारत की संस्कृति के विविध और विशिष्ट रंगों से दुनिया को अवगत कराएंगे।

"जी-20 की अध्यक्षता हमारे लिए एक बड़ा अवसर बनकर आई है। हमें इस मौके का पूरा उपयोग करते हुए विश्व कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना है।"

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

युवा किसी न किसी रूप में जी-20 से जरूर जुड़ें

मोदी ने कहा कि आने वाले दिनों में देश के अलग-अलग हिस्सों में जी-20 से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस दौरान दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से लोगों को विभिन्न राज्यों में आने का मौका मिलेगा। प्रधानमंत्री ने देशवासियों, खासकर युवाओं से आग्रह किया कि वे किसी न किसी रूप में जी-20 से जरूर जुड़ें।

स्कूल और कॉलेज प्रतियोगिता का आयोजन करें

मोदी ने स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से भी आग्रह किया कि वे अपने संस्थानों में जी-20 विषय पर वार्ता, परिचर्चा और प्रतियोगिताओं का आयोजन करें। मोदी ने तेलंगाना के राजन्ना सिरिसिल्ला जिले के एक बुनकर येल्दी हरिप्रसाद गारू द्वारा जी-20 का प्रतीक चिह्न बनाकर उन्हें भेजे जाने का भी उल्लेख किया।

विद्या दान करना समाज के हित में सबसे बड़ा काम

मोदी ने विद्या दान को समाज हित में सबसे बड़ा काम बताते हुए कहा कि यूपी के जतिन ललित सिंह और झारखंड के संजय कश्यप बच्चों को किताबें व अन्य जरूरी सामग्री मुहैया करा कर शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगा रहे हैं।

विक्रम-एस के परीक्षण से नए युग की शुरुआत

मोदी ने कहा कि पहले निजी रॉकेट 'विक्रम-एस' के सफल परीक्षण ने भारत में निजी अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए नए युग की शुरुआत की है। उन्होंने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निजी क्षेत्र के योगदान की सराहना भी की।

T'gana weaver designed G20 logo, says PM

Y Hariprasad Garu from Ranjana Sircilla district sent a letter to PM with hand-woven logo that was later selected

The G20 has a partnership representing two-thirds of the world's population, three-fourths of world trade, and 85 per cent of world GDP. You can imagine India is going to preside over such a big group, such a powerful group, from December 1

Narendra Modi, Prime Minister

PM: Launch of Vikram-S rocket heralded 'new era' for pvt cos

Surendra.Singh@timesgroup.com

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi, in his monthly radio address Mann Ki Baat on Sunday, said that the launch of 'Vikram S' rocket heralded a "new era" for the private space sector in India.

The PM said that on November 18, the whole country witnessed "new history" being made in the space sector. "On this day, India successfully launched the first privately made rocket, designed and developed by a startup (Skyroot Aerospace), marking the entry of the private sector into the country's space ecosystem. When the rocket, named Vikram-S, made the historic liftoff from Sriharikota, every Indian felt proud."

The rocket, Vikram-S named after the father of the country's space programme Vikram Sarabhai, achieved success in its maiden mission.

Vikram-S development cost is much less than the cost incurred by other countries involved in space missions, Modi said, adding that "in space technology world class standard at a low cost has now become the hallmark of India". He also highlighted how some crucial parts of this rocket have been made through 3D printing.

Children, who once used to draw shapes in the sky looking at the moon and stars, are now getting a chance to make rockets in India itself, he said. For them, sky is not the limit, he said.

India to focus on global good, world welfare as G20 head: PM

Can solve issues related to peace or unity, environment or sustainable development, says Modi

NEW DELHI

PM Modi and the hand woven logo that he received from the artisan

T'gana weaver's surprise to Prime Minister

HYDERABAD

A weaver from Telangana surprised Prime Minister Narendra Modi with his unique gift — a hand woven logo of the G20. The Prime Minister was all praise for the weaver during his monthly radio programme 'Mann Ki Baat'. Veldi Hariprasad from Rajanna Sircilla district sent the novel gift to the Prime Minister. IANS

సాక్షి

'అంతరిక్షం'లో నూతన సూర్యోదయం

మన్‌కీ బాత్‌లో ప్రధాని మోదీ

- విక్రమ్–ఎస్ ప్రయోగం గర్వకారణం
- జీ20 సారథ్యం గొప్ప అవకాశం

મન કી બાતમાં પ્રધાનમંત્રી મોદીએ કહ્યું "G-20માં અધ્યક્ષતાએ ભારત માટે ખુબ જ મોટી તક છે"

'मन की बात' में कहा- जी-20 की अध्यक्षता मिलना भारत के लिए गौरव की बात

वैश्विक चुनौतियों का समाधान भारत के पास : प्रधानमंत्री मोदी

અમે એક પૃથ્વી, એક પરિવાર, એક ભવિષ્યની થીમ આપી છે : વડાપ્રધાન

മൻ കി ബാത്ത്

ജി-20 അധ്യക്ഷപദവി സമഗ്ര വികസനത്തിനുള്ള അവസരം -മോദി

Telangana weaver surprises PM Modi with novel G20 gift

'Nagaland's culture, music glorious heritage of India'

THE TIMES OF INDIA

Mann Ki Baat: PM Modi appreciates efforts of Himachal's health centre in spreading awareness about muscular dystrophy

Hindustan Times

'Bapu's favourite song but... ': PM Modi on 'Mann ki Baat' | LISTEN

LOKMAT TIMES

PM Modi notes contribution of common men in education, mentions Jharkhand's 'Library Man'

Business Standard

PM Modi calls Nagaland's culture, music glorious heritage of India

ThePrint

PM Modi says export of musical instruments increased 3.5 times in 8 years

ZEE उत्तर प्रदेश उत्तराखंड

Mann Ki Baat : हरदोई के जतिन की लाइब्रेरी के मुरीद हुए पीएम मोदी, मन की बात में कही ये बड़ी बात

abp न्यूज़

Mann Ki Baat: 'कागज के हवाई जहाज उड़ाने वाले युवा अंतरिक्ष में भेज रहे रॉकेट'- PM Modi

जागरण

Mann Ki Baat: पीएम मोदी ने मन की बात में सराही किन्नौर की तकनीक, बताया ड्रोन से मंडियों तक कैसे पहुंचाया सेब

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार